

हवन-यज्ञ द्वारा रोग उपचार

पर्यावरण-सुधार एवं सुख-शांति का आधार

सुभाष चन्द्र गुप्ता

सत्यम

दीक्षा

सरस्वती साहित्य संस्थान
295 जागृति एन्कलेव, दिल्ली-92 ☎ 22152435

वेद प्रचार सप्ताह (श्रावणी पर्व)

घर-घर होवे वेद प्रचार, जन-जन को हो वेद से प्यार।
पी लो वेद-सुधा की धार, होवे जीवन का उद्धार॥

1. **यज्ञानुष्ठान**—वेद प्रचार सप्ताह में विशेष यज्ञों का आयोजन किया जाता है, जो हमारी प्राचीन वैदिक परम्परा के अनुरूप है। यज्ञों द्वारा वेद की रक्षा, पर्यावरण की शुद्धि तथा अनेक शारीरिक एवं आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होते हैं।

2. **वेद-कथा**—वेद कथाओं द्वारा सर्व-साधारण तक वेद की अमूल्य शिक्षाओं को पहुँचाया जाता है।

3. **स्वाध्याय**—वेद प्रचार सप्ताह का ***'स्वाध्याय पर्व'*** के रूप में भी विशेष महत्व है। उपनिषद् का आदेश है— **'स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'** *(तै० उ० ११/१)*

स्वाध्याय और वेदोपदेश में कभी प्रमाद न करें। 'नित्य स्वाध्याय' के व्रत को दृढ़ता से पालन करने का संकल्प लिया जाता है।

4. **स्वाध्याय क्यों करें?** जिस प्रकार शरीर को निरोग और स्वस्थ रखने के लिए भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य के लिए स्वाध्याय अनिवार्य है। वर्तमान काल में, जबकि प्रत्येक व्यक्ति नकारात्मक चिन्तन, मानसिक चिंताओं और तनाव (Tension Depression) का शिकार है, ऐसे समय में स्वाध्याय का महत्व और भी बढ़ जाता है। स्वाध्याय से विचारों की पवित्रता, ज्ञान की अभिवृद्धि उत्साह-साहस और निर्भयता की प्राप्ति होती है। इस प्रकार स्वाध्याय से, व्यक्ति का मन शान्त, तनाव मुक्त और प्रफुल्लित हो जाता है। इसलिए स्वाध्याय मानसिक उन्नति के लिए परमावश्यक है।

सरस्वती साहित्य संस्थान
295, जागृति एन्क्लेव, दिल्ली-92 ✆ : 2215 2435

8019



मानव-मात्र के लिए अद्भुत वरदान

हवन-यज्ञ द्वारा रोग उपचार

पर्यावरण-सुधार एवं सुख-शांति का उपहार

लेखक :

सुभाष चन्द्र गुप्ता

वैदिक प्रवक्ता, योग प्रचारक, रेकी ग्रैंडमास्टर

सरस्वती साहित्य संस्थान

295, जागृति एन्क्लेव, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष : 2152435, 65909389

समर्पण

इस पुस्तक का समर्पण है—उन समस्त **ऋषियों- मुनियों** को, जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा यज्ञ-हवन का संसार में प्रचार-प्रसार किया, **तथा**

महान् समाज-सुधारक, मानव हितकारक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी** को, जिन्होंने उपेक्षित और विस्मृत वेदों का उन्नीसवीं शताब्दी में पुनरुद्धार किया, तथा यज्ञ-हवन के विशुद्ध वैदिक स्वरूप को पुनः प्रचारित किया। **–सुभाष**

शत-शत नमन

मेरा शत-शत नमन है परम पूज्या स्वर्गीया **माता श्रीमती यशवती जी** को, जिन्होंने मुझे अपने अनमोल उपदेशों-निर्देशों द्वारा वैदिक पथ का पथिक बनाया, एवं यज्ञ-हवन के प्रति मेरे हृदय में अगाध श्रद्धा एवं दृढ़ आस्था का सृजन किया।

–सुभाष

- **'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'**
  – यज्ञ सृष्टि का सही संतुलन बनाने वाला है।
- **'नौर्हवा वै स्वर्ग्या यदग्निहोत्रम्'** *–शतपथ ब्राह्मण*
  – अग्निहोत्र स्वर्ग की नौका है।
- 'जितना घृत व सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है, उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है।' *–सत्यार्थ प्रकाश*
- **'यज्ञो वै श्रेष्टतमं कर्म'** *–शतपथ ब्राह्मण १.७.१.५*
  यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है, क्योंकि इससे जल, वायु, वातावरण इत्यादि की शुद्धि होती है।

भूमिका

इतिहास में एक युग ऐसा भी रहा जब घर-घर में हवन-यज्ञ हुआ करते थे। उसकी झलक हमें महाराज अश्वपति की निम्न घोषणा से मिलती है–

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतो॥

इसमें उन्होंने स्पष्ट कहा था कि उनके राज्य में कोई ऐसा घर नहीं, जहां वायु-जल की शुद्धि के लिए 'हवन' न होता हो। यह दैनिक हवन का परिणाम ही था कि तब वायुमण्डल प्रदूषण -मुक्त रहता था। **रामचरित मानस** में भी तुलसीदास जी ने लिखा कि–रामायण काल में लोग यज्ञ करने वाले थे (**जहँ जप जग्य जोग मुनि करहिं**) इसीलिए उनके यज्ञव्रती और वेद-परायण होने के कारण रामराज्य में सर्वत्र सुख-शान्ति थी–

दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहिं व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

पर्यावरण की शुद्धि, सुस्वास्थ्य और निरोगिता की परमावश्यकता पर बल देते हुए **महामति चाणक्य** ने कहा था–**'जिस घर में हवन-यज्ञ नहीं होता हो, वह घर, घर नहीं नरक समान** है।'

हवन का स्वर्णिम युग समाप्त हो गया। आज ऐसा समय आया, जबकि 'हवन' करने वाले घरों की संख्या गिनी-चुनी रह गई है। परिणाम-हवन न होने से रोग बढ़े, अशान्ति बढ़ी, पर्यावरण की समस्या ने भीषण रूप धारण कर लिया। आज प्रदूषित वायुमण्डल के कारण ही विश्व के १३० देशों के २५०० वैज्ञानिकों को चेतावनी देनी पड़ी कि यदि पर्यावरण-शुद्धि पर अब भी तुरन्त पर्याप्त ध्यान न दिया गया, यदि पृथ्वी के बढ़ते हुए तापमान को रोकने के प्रभावी उपाय न किए गए, तो संसार के कई नगर व स्थान समुद्र में डूब जाएंगे, ग्लेशियर पिघल जाएंगे, अतिवर्षा,

गर्म लहरें, सूखा आदि के प्रकोप से धरती विनाश के कगार पर पहुंच जाएगी–

"Clearly we are endangering all species on earth, we are endangering the future of the human race", the UN Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) Chairman said. (Times of India dt. 3.2.2007)

कैसे रुके बढ़ता प्रदूषण, कैसे हो पाए ओज़ोन-परत रूपी कवच की रक्षा, कैसे मिटे वायुमण्डल के निरन्तर बढ़ रहे तापमान (Global warming) का भीषण संकट, कैसे होवे अन्न के अभाव के कारण होने वाली बढ़ती भुखमरी का अंत, कैसे सुलझे अनावृष्टि, अतिवृष्टि, तेज़ावी वर्षा की उलझन, कैसे सुख-शान्ति पा सके पृथ्वी पर रहने वाला हर इनसान? —इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है, सभी समस्याओं का एक ही समाधान है, सभी आधि-व्याधियों का एक ही इलाज है—वह है 'हवन'। कैसे? —यही इस पुस्तक के द्वारा बताने-दर्शाने का विनम्र प्रयास किया गया है।

आशा है, पाठकगण पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके हवन-यज्ञ के महत्त्वपूर्ण लाभदायक पहलुओं को स्वयं जानकर, औरों में भी उनका प्रचार-प्रसार करेंगे, ताकि हवन के प्रति सबका श्रद्धा-विश्वास जगे, रामायण-महाभारत काल की पुनरावृत्ति हो और घर-घर में 'हवन' द्वारा सुख-शांति, आनन्द की धाराएं बहने लगें। पुस्तक-प्रकाशन हेतु हवन-यज्ञव्रती आदरणीय श्री रवीन्द्र मेहता जी का हार्दिक आभार। लेखन-कार्य में सहयोगार्थ, धर्मपत्नी श्रीमती शशिकला गुप्ता, एम.ए. का धन्यवाद।

आर्य सदन *स्वाध्यायशील प्रेमियों का सेवक*
१५६, ए.जी.सी.आर. एन्क्लेव **सुभाष**
दिल्ली-९२, दूरभाष : २२३७७२९७

विषय सूची

1. हवन -मानव मात्र के लिए अद्भुत वरदान

'हवन' सम्पूर्ण विश्व के लिए एक अद्भुत वरदान है। 'हवन' शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक उन्नति का महत्त्वपूर्ण साधन है। नित्य हवन करने से मानव का रक्त शुद्ध होता है, शरीर निरोग व स्वस्थ बनता है। वेद-मंत्रों की स्वरलहरियों का मनुष्य के मन-मस्तिष्क पर आरोग्यकर, चिकित्सकीय एवं व्यापक प्रभाव पड़ता है। सस्वर मंत्र-पाठ की ध्वनि तरंगें (Sound waves) रोगोपचार में उसी प्रकार सहायक बनती हैं, जिस प्रकार फिज़ोथेरेपी के दौरान अल्ट्रासॉनिक या सुपरसॉनिक तरंगें दर्द वाले स्थान को दर्दमुक्त करती हैं। वेद मंत्रों में व्याप्त सर्वहितकारी शिक्षाएं भी मनुष्य के मन व आत्मा के लिए पावक एवं उत्थापक होती हैं, तथा समाज के लिए उन्नतिकारक प्रेरणा प्रदान करती हैं। हवन में प्रयुक्त जड़ी-बूटियों, घी आदि द्रव्यों का अग्नि द्वारा सूक्ष्म परमाणुओं में बदलकर वायुमंडल में फैला देने से वातावरण शुद्ध तथा पर्यावरण प्रदूषण-मुक्त एवं रोग-कीटाणु रहित हो जाता है। हवन का खाद्य-उत्पादन की वृद्धि करने एवं खाद्य-पदार्थों की गुणवत्ता बढ़ाने में भी विशेष योगदान है। 'हवन' वर्षा की कमी को दूर करता तथा तेज़ाबी वर्षा एवं अतिवृष्टि के खतरों को मिटाता है। इस प्रकार, 'हवन' मानव का परम मित्र एवं प्रबल संरक्षक है।

2. प्राचीन काल में सम्पूर्ण विश्व में हवन-यज्ञ का व्यापक प्रचार

(क) राजा-महाराजाओं व चक्रवर्ती सम्राटों द्वारा हवन यज्ञ

१. सम्राट् मान्धाता का यज्ञ प्रेम : प्राचीन काल के सार्वभौम सम्राट् मान्धाता के (जिनकी कि श्रीराम ने भी बाली-संवाद के समय चर्चा की थी) के समय एक बार देश में वर्षा न होने के कारण चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। तब मान्धाता ने

स्थान-स्थान पर 'वृष्टि-यज्ञों' के आयोजन किए। उन यज्ञों के परिणाम स्वरूप आकाश में बादल बने और खूब वर्षा हुई। सारी धरती हरी-भरी हो गई, संसार के सब प्राणी सुखी हो गए।

२. **चक्रवर्ती पुरुकुत्स** मान्धाता के पुत्र थे। वे मान्धाता के पश्चात् अयोध्या के सिहांसन पर अभिषिक्त हुए। इन्होंने भी अश्वमेध यज्ञ किया था।

३. **सम्राट् हरिश्चन्द्र द्वारा राजसूय यज्ञ**–सत्यवादी, सत्य मूर्ति महाराज हरिश्चंद्र ने राजसूय यज्ञ किया, जिसमें पर्वत एवं नारद ऋषि भी याज्ञिक बने थे और सारे विजित राजा भी उपस्थित थे।

४. **चक्रवर्ती पुरूरवा** राजर्षि और मंत्रद्रष्टा थे। इन्हें कई यज्ञाग्नियों का आविष्कर्त्ता कहा गया है।

५. **सम्राट् ययाति** नित्य सन्ध्या, अग्निहोत्र, अतिथि पूजन आदि कर्म बड़ी सावधानी और कर्त्तव्य बुद्धि से करते थे और सम्पूर्ण देश में इनका प्रचार भी करते थे।

६. **महाराजा जनमेजय** ने तीन अश्वमेध यज्ञ कर ख्याति प्राप्त की थी।

७. **महाराजा मतिनार** ने सरस्वती नदी के तट पर बारह वर्ष का दीर्घ यज्ञ रचाया था। इसी के वंश में भरत जैसे प्रसिद्ध चक्रवर्ती हुए।

८. **चक्रवर्ती शशि बिन्दु** ने अनेकों अश्वमेध यज्ञ किए।

९. **चक्रवर्ती सम्राट् भरत** ने यमुना-सरस्वती-गंगा नदियों के तटों पर कई अश्वमेध यज्ञ किए। इसने 'मण्णार देश' (जो अफ्रीका में स्थित है) में भी यज्ञ किया, जिसमें कई उत्तम जाति के हाथियों सोने के गहनों से सजाकर दान भी किया। कुछ लोगों का कहना है कि इसी भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत देश हुआ।

१०. **कैकेय देश के राजा अश्वपति की घोषणा :** कैकेय देश

के राजा अश्वपति ने घोषणा की थी कि—मेरे देश में कोई चोर नहीं। कोई ऐसा घर नहीं जहां वायु-जल की शुद्धि के लिए हवन **न होता** हो। कोई मूर्ख नहीं। कोई व्याभिचारी नहीं, तो फिर व्यभिचारिणी कैसे हो सकती है?—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतो ॥

—छांदोग्य उपनिषद्

११. **महाराजा रघु** ने 'सर्वमेध यज्ञ' में अपना सारा संचित धन ब्राह्मणों को दान में दिया था।

१२. **चक्रवर्ती सम्राट् दशरथ** नित्य अग्निहोत्र-यज्ञ किया करते थे।

3. रामायण काल में हवन-यज्ञ

१. **पांच यज्ञ :** रामायण काल में लोग पांच यज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूत यज्ञ और अतिथि यज्ञ) नित्य किया करते थे। वे सोलह संस्कार भी बड़ी श्रद्धा और प्रेम से किया करते थे। प्रत्येक संस्कार में हवन-यज्ञ करना आवश्यक था और वेदमंत्रों का गान किया जाता था।

२. **अगस्त्य ऋषि की होमशाला :** जब लक्ष्मण-सीता सहित राम अगस्त्य मुनि के आश्रम में पहुंचे, उस समय मुनिवर अपनी होमशाला में यज्ञ-आसन पर विराजमान थे।

(अरण्य काण्ड- १३/१५१)।

३. **भरद्वाज ऋषि के आश्रम में यज्ञ :** इनका आश्रम तीर्थराज प्रयाग के समीप था। यहां अनेक यज्ञों का वैज्ञानिक पद्धति से आयोजन किया जाता था। प्रयाग तीर्थ का नाम प्रयाग वहां पर किए गए यज्ञों की अधिकता के कारण ही पड़ा था।

४. **अत्रि आश्रम** में अत्रि ऋषि ने अनेक यज्ञ इस अभिप्राय से किएं थे कि उनके कुल में ऋषि ही जन्में। उसका फल था कि उनके कुल में ऋषि ही नहीं, मंत्रकृत ऋषिकाएं भी उत्पन्न

हुई। अपाला और प्रसिद्ध ऋषि पत्नी अनुसूमा इसी कुल की देवियां थीं।

५. वाल्मीकि रामायण में यज्ञों का वर्णन–

(i) रामायण काल में हर आदमी यज्ञ-हवन करने वाला था–**'नानाहिताग्निः अयज्वा न क्षुद्रो वा ना तस्करः'**।

(ii) **राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ** के द्वारा ही चार पुत्र रत्नों– राम, भरत, लक्ष्मण, और शत्रुघ्न-की प्राप्ति की थी। यह यज्ञ ऋष्यश्रृंग ने कराया था।

(iii) **श्रीराम की माता कौशल्या** नित्य व्रतपरायण प्रसन्न हुई मंत्रसहित हवन करती थीं–

सा क्षौमवसना हृष्टा नित्यं व्रतपरायणा।
अग्निं जुहोति स्म तदा मंत्रवत्कृतमङ्गला॥

–वा.रा. अयोध्याकांड

प्रविष्य तु तदारामः मातुः अन्तः पुरम् शुभम्।
ददर्श मातरं तत्र हावयन्तीं हुताशनम्॥ *(वा.रा.)*

राम जव कौशल्या-गृह में आए, तो उन्होंने अपनी माता कौशल्या को हवन करते देखा।

(iv) **सीता :** श्रीराम, वन-गमन के समय जब सीता से विदा लेने के लिए पंहुचते हैं, सीता तभी अग्निहोत्र पूर्ण करके उनका अभिवादन करती हैं।

(v) **विश्वामित्र द्वारा हवन करने के लिए सन्देशः** विश्वामित्र ने राम, लक्ष्मण से कहा कि–

'स्नाताश्च कृतजप्याश्च हुतहव्या नरोत्तम'॥ *बालकाण्ड*

हम लोग स्नान करेंगे और जप करके हवन करेंगे।

(vi) **भरत, शत्रुघ्न** के भी हवन और जप करने का उल्लेख–

रजन्यां सुप्रभातायां भ्रातस्ते सुहृद्वृताः।
मदाकिन्यां हुतं जप्यंकृत्वा राममुपागमत्॥

सर्ग १०५, अयोध्याकाण्ड

रात्रि के बीतने पर वे भाई, मित्रों के साथ मन्दाकिनी के तीर पर स्नान, हवन और जप करके रामचन्द्र के पास आए।

(vii) **ऋषि-मुनियों द्वारा अग्निहोत्र करने का वर्णन**

वासं चक्रुर्मुनिगणाः श्रीणाकूले समाहिताः ।
तेऽस्तं गते हिनकरे स्नात्वा हुतहुताशनाः ॥

सर्ग ३१/बालकाण्ड

सूर्य के अस्त होने के समय में, स्नान करके उन मुनियों ने अग्निहोत्र किया।

(viii) **लंका में भी सभी घरों में हवन** का प्रचलन था। ऐसा हनुमान ने लंका-प्रवेश के दौरान पाया–

'अग्निहोत्रं वेदपाठं च राक्षसानां गृहे-गृहे।' –*रामायण*

(ix) **अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ :** जब श्रीराम, लंका-विजय के पश्चात् अयोध्या वापिस लौटे, तब जनता ने धूमधाम से उनका स्वागत किया। उस समय अश्वमेध यज्ञ द्वारा उन्हें राजगद्दी पर बिठाया गया।

4. रामचरित मानस में हवन का वर्णन

(i) **जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं।**
अति मारीच सुबाहुहि डरहीं।
देखत जग्य निसाचर धावहिं।
करहिं उपद्रव मुनि दुःख पावहिं॥

वे मुनि, जप, यज्ञ और योग का अनुष्ठान करते थे, परन्तु मारीच और सुबाहु से बहुत डरते थे। यज्ञ देखते ही राक्षस दौड़ पड़ते थे और उपद्रव मचाते थे, जिससे मुनि दुःख पाते थे।

(ii) **मुनियों के यज्ञों की श्रीराम द्वारा रक्षा–**

प्रात कहा मुनि सन रघुराई, निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई।
होम करन लागे मुनि झारी आयु रहे मख की रखवारी॥

सवेरे श्रीराम ने मुनि से कहा–आप भय छोड़कर (निश्चिन्त भाव से) यज्ञ कीजिए। यह सुनकर मुनिगण हवन करने लगे और

श्रीराम-लक्ष्मण यज्ञ-रक्षा के लिए सन्नद्ध हो गए।

(iii) **सीता जी द्वारा यज्ञवेदी का निर्माण**–वन में भी श्रीराम, लक्ष्मण व सीता जी नित्य हवन-यज्ञ करते थे। पंचवटी में पहुंचने पर सीता जी ने अपने ही कर-कमलों से सुन्दर यज्ञवेदी का निर्माण किया–

तुलसी तरुवर विविध सुहाए, कहुं कहुं सिय कहुं लषण लगाए।
वट छाया वेदिका बनाई, सिय निज पाणि सरोज बनाई॥

वहां अनेक प्रकार के तुलसी के वृक्ष शोभित हैं। जिनको कहीं-कहीं सीता और कहीं लक्ष्मण ने लगाया है। बरगद की छाया में सीता जी ने अपने ही हाथों से सुन्दर यज्ञवेदी बनाई।

(iv) **मुनि वशिष्ठ द्वारा यज्ञ–**

अरुन्धति अरु अग्नि समाजू।
रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराजू॥

मुनि वशिष्ठ अपनी पत्नी अरुन्धति सहित यज्ञ का सामान लेकर रथ पर आरूढ़ हुए।

5. महाभारत काल में हवन-यज्ञ

१. पाण्डुओं द्वारा वन में हवन–

अग्नौजुहन्नुभौकालावुभौ कालावुपस्पृशन्। *महाभारत ११८/३३*

पाण्डु वन में दोनों समय, संध्या, अग्निहोत्र करने एवं वेदादि शास्त्रों के विचार में एकान्तशील रहने लगे.....।

२. श्रीकृष्ण द्वारा अग्निहोत्र करने का वर्णन–

(i) अभिमन्यु-वध के दिन सायंकाल अपने शिविर में जाने से पूर्व अर्जुन और श्रीकृष्ण ने संध्या हवन किया।

(ii) हस्तिनापुर में कौरव-सभा में जाने से पूर्व श्रीकृष्ण ने संध्या और अग्निहोत्र (हवन) किया।

(iii) युधिष्ठिर की राजधानी में रात्रि विश्राम के पश्चात् जब पहर रात्रि रहने पर श्रीकृष्ण जगे, तब उन्होंने प्रातः स्मरणीय मंत्रों से सनातन ब्रह्म का ध्यान कर, फिर स्नान किया। तत्पश्चात्

प्रणव तथा गायत्री जाप एवं संध्या कर नित्य का होम (हवन) किया। (शांति ५३/१, २-७)

(iv) **श्रीकृष्ण की दिनचर्या में नित्य हवन भी सम्मिलित**– श्रीकृष्ण संध्या कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठते, गायत्री से ईश्वर का जप करते, फिर यज्ञशाला में जा, वेदमंत्रों से अग्निहोत्र करते–

जजाप जप्यंकौन्तेयः सतांमार्गमनुष्ठितः।
तत्राग्निशरणंदीप्तं प्रविवेश विनीतवत्॥ ८२/१३
समिद्भिः सपवित्राभिरग्निमाहुतिभिस्तथा।
मंत्रपूताभिरर्चित्वा निश्चक्राम गृहात्ततः॥ १४

३. **महाभारत काल के राजसूय यज्ञ के लिए**–श्रीकृष्ण और अर्जुन पाताल देश (अमेरिका) से उद्दालक ऋषि को लाए थे। उस यज्ञ में विश्व के अनेक देशों के राजे-महाराजे पधारे थे, जिनमें शामिल थे–चीन के भगद्दत्त, अमरीका के बब्रुवाहन, यूरोप के विडालाक्ष और ईरान के शल्य। यह यज्ञ तव किया गय. जव पाण्डवों ने खाण्डव वन जलाकर इन्द्रप्रस्थ नगर की स्थापना की थी।

४. **वैष्णव यज्ञ**–जूए में हार जाने के बाद जव पाण्डव, शर्त के अनुसार, १२ वर्ष के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास के लिए राजपाट छोड़कर चले ग. थे, तव कर्ण की प्रेरणा से दुर्योधन ने राजाओं को जीतकर 'वैष्णव यज्ञ'– एक प्रकार का राजसूय यज्ञ– ही किया था।

(महाभारत वनपर्व, अध्याय २५५/१६,२०,२१)

५. **अश्वमेध महायज्ञ**–यह उस समय किया गया जव महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया और युधिष्ठिर को राजगद्दी पर बैठाया गया था।

६. **परीक्षित के सिंहासन ग्रहण करने पर महायज्ञ**–यह उस समय किया गया जव युधिष्ठिर द्वारा पाण्डवों सहित महाप्रस्थान

किया गया और अर्जुन का पौत्र परीक्षित राज्य सिंहासन पर बैठा।

७. **सर्प यज्ञ**—यह परीक्षित के पुत्र जनमेजय द्वारा अयोजित किया गया था।

८. **गीता द्वारा यज्ञ न करने वाले को कड़ी फटकार**—गीता के तीसरे अध्याय में श्लोक ९ से १६ तक यज्ञ की प्रशंसा की गई है और इसे मानव समाज के लिए कामधेनु कहा गया है। यज्ञ न करने वाले की कड़ी भर्त्सना करते हुए गीता का कथन है—

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति॥ *गीता ३/१६*

इस यज्ञ-चक्र का जो ठीक ढंग से पालन नहीं करता, उसका जीवन पापरूप है, वह इन्द्रियों का गुलाम है और हे अर्जुन! उसका जीवन व्यर्थ है।

6. प्राचीन ग्रंथों में यज्ञ विद्या का वर्णन

१. **'आपस्तम्ब कल्प सूत्र'** में आचार्य आप स्तम्ब ने २१ प्रकार के यज्ञों का परिगणन किया है।

२. **ऐतरेय ब्राह्मण** में दासीपुत्र ऐलूष द्वारा यज्ञानुष्ठान का वर्णन मिलता है।

३. **महीदास** महान् याज्ञिक थे और ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता थे।

४. **हवन कुंडों के आकार-प्रकार** का विस्तृत 'शुल्व सूत्र' नामक ग्रंथ में प्राप्त होता है।

५. **स्मृतियों, सूत्रग्रंथों, ब्राह्मणों** में विभिन्न प्रकार के यज्ञों का विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। जैमिनी ऋषि का मीमांसा दर्शन मुख्यतः इन यज्ञों का ही वर्णन करता है।

६. **गोपथ ब्राह्मण** में निम्न यज्ञों का वर्णन है—अग्न्याधान, पूर्णाहुति, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रहायण (नवसस्येष्टि), चातुर्मास्य, पशुबन्ध, अग्निष्टोम, राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, आदि।

7. संसार के अनेक देशों में प्राचीन काल के यज्ञों के प्रमाण

(i) **अरब देशों** में हज़रत मुहम्मद साहब के जन्म के २३०० वर्ष पूर्व वेदों का प्रचार था तथा वहां बृहद् यज्ञशालाएं थीं, जिनमें बड़े-बड़े यज्ञ सम्पन्न होते रहते थे। उनमें सम्मिलित होने के लिए दुनिया भर से आर्यजन पधारा करते थे।

(ii) **सबसे प्राचीन यज्ञकुण्ड** इंडोनेशिया के टापू बोर्न्यो (Borneo) में मिला था।

(iii) **मैक्सिको** की खुदाई में प्राचीन यज्ञकुण्ड मिला। वहां प्राप्त शिलालेख से पता चला कि वह हवनकुण्ड राजा पूर्ण वर्मा ने बनवाया था जो वहां राज्य करता था और उसने वहां यज्ञ करवाया था। वह यज्ञ कुण्ड बड़ा विशाल और वर्गाकार था। तल की अपेक्षा से उसका ऊपर का भाग चौगुना था।

(iv) ३५०० **वर्ष पूर्व** प्राचीन यहूदी मत में भी हवन को मान्यता प्राप्त थी।

(v) **बोर्नियो** (Borneo) में संस्कृत भाषा के 7 शिलालेख मिले। एक शिलालेख में राजा मूलवर्मा के बहुसुवर्णक नामक यज्ञ का उल्लेख है। यज्ञ की समाप्ति पर राजा मूलवर्मा ने ब्राह्मणों के लिए बीस हज़ार गौएं दान कीं।

8. वर्तमान काल में अनेक देशों में यज्ञ के प्रति बढ़ती रुचि

(i) **पोलैण्ड में** १७ स्थानों पर यज्ञशालायें आरम्भ की गईं। जब पहली बार वहां अग्निहोत्र आरम्भ किया गया, तब लोगों में अग्निहोत्र के प्रति इतना अधिक आकर्षण एवं उत्साह था कि जैसे ही यह घोषणा की गई कि कल केवल वही लोग पधारें, जो अग्निहोत्र का अभ्यास तुरन्त आरम्भ करना चाहते हैं, तब २०० से अधिक वैज्ञानिक वहां पहुंचे और अग्निहोत्र में सम्मिलित हुए।

(ii) **पश्चिमी जर्मनी** में, नष्ट हो रहे पेड़ों को बचाने के लिए १९८४ में अग्निहोत्र का एक त्रैमासिक शोध-कार्य आरम्भ किया गया। इसके परिणामस्वरूप पेड़ों की सूखी हरियाली पुनः लौट आई। (सर्वहितकारी दिनांक २८.१२.१९८६)

(iii) **वाशिंगटन में,** अग्निहोत्र का प्रचार-कार्य श्री वसन्त पराञ्जपे ने १९७२ में आरम्भ किया था।

(iv) **अमेरिका में** अग्निहोत्र प्रेस फार्म, बाल्टीमोर, मेरीलैण्ड, में ९.९.१९७८ से निरन्तर दिन रात (चौबीसों घंटे) यज्ञ (होम) चल रहा है।

(v) **चिली** के एंडेस पर्वत (Andes Mountains) में एक विशेष यज्ञशाला (Fire Temple) बनाई गई, जहां पर सहस्रों लोगों के शारीरिक कष्टों का निवारण हुआ बताया जाता है।

(vi) **वर्जीनिया**—अमरीका का वर्जीनिया (Virginia) सबसे ज़्यादा प्रदूषण से प्रभावित था। वहां २२.९.१९७३ को एक वैदिक हवनकुंड बनाया गया और नियमित रूप से हवन प्रारम्भ हुआ। कुछ वर्षों के पश्चात् ही वहां के वातावरण में ५० प्रतिशत तक प्रदूषण में कमी पाई गई।

9. वेद मंत्रों के उच्चारण का शरीर, मन, आत्मा और वातावरण पर अद्भुत प्रभाव

(१) **वेद पाठ को संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा मान्यता**—संयुक्त राष्ट्र संघ के शिक्षा एवं सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) द्वारा वेद पाठ को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करते इसे मानव सभ्यता की अलौकिक विरासत घोषित किया गया।

(२) **वेद पाठ हृदय के लिए शांतिदायक**—यूनेस्को द्वारा ७ नवम्बर, २००३ को पेरिस में गीत-संगीत की एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित की गई। उसमें वेदपाठ की उपयोगिता को हृदय की शान्ति-सान्त्वना के लिए सर्वोच्च प्रथम स्थान पर ठहराया गया।

(३) **मंत्रों की ध्वनि-तरंगें रोग उपचार में सहायक**–मंत्रों की ध्वनि तरंगें (sound waves) शरीर व मन पर शक्तिशाली प्रभाव डालती हैं। ये तरंगें रोगों के उपचार में उसी प्रकार सहायता करती हैं, जिस प्रकार फिज़ोथेरेपी (physiotherapy) में अल्ट्रासॉनिक या सुपरसॉनिक ध्वनि तरंगों (Ultrasonic or Supersonic Waves) द्वारा शरीर के दर्द वाले स्थानों का दर्द दूर किया जाता है।

(४) **भारत के राष्ट्रपति द्वारा वेद मंत्रों के व्यापक प्रभाव की चर्चा**–वेद मंत्रों के उच्चारण से उत्पन्न स्वर लहरियों (sound waves) द्वारा शरीर के विभिन्न अवयवों-अंगों पर पड़ने वाले व्यापक लाभकारी प्रभाव के विषय में, भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने, हरिद्वार में उत्तरांचल संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित समारोह में कहा–'वेद मंत्रों का मानव मस्तिष्क पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और इससे मस्तिष्क तरोताज़ा रहता है। राष्ट्रपति महोदय ने वहां वेद मंत्रों की सी. डी. भी मंच से चलवाकर सारे जनसमूह को वेदमंत्रों को सुनने की प्रेरणा दी तथा स्वयं भी खड़े होकर वैदिक मंत्र-पाठ सुनते रहे।

–आर्य जगत् १४.११.२००४

(५) **अमेरिकन मनोवैज्ञानिक द्वारा 'हवन' के मन पर रोग निवारक प्रभाव की पुष्टि**–अमेरिका मनोवैज्ञानिक बैरी राथनर (Barry Rathner) ने पूना यूनिवर्सिटी में अग्निहोत्र पर शोध के दौरान पाया कि अग्निहोत्र (हवन) वातावरण में कुछ विशेष प्रभाव पैदा करता है और मानव के मन पर भी आरोग्यकर (रोगहर, चिकित्सकीय, रोग मिटाने वाला-therapeutic) प्रभाव डालता है।

(६) **डिवाइन लाइफ सोसायटी ऋषिकेश के प्रसिद्ध योगी स्वामी शिवानन्द जी** के अनुसार–"Chanting of Mantras destroys the microbes and vivifies the cells and tissues. They are more potent than ultra-violet rays or Rontgen rays."

अर्थात्–वेद मंत्रों का गायन-रोगाणुओं को नष्ट कर देता

है और कोशिकाओं व ऊतकों को अनुप्राणित करता है—उनमें नव जीवन का संचार करता है। वेद मंत्र सर्वोत्तम, सर्वाधिक शक्तिशाली रोगाणुशोधक और रोगाणुनाशक हैं (रोगों के कीटाणुओं को रोकने और उन्हें मिटाने वाले हैं)। वेद मंत्रों का गायन पराबैंगनी व अल्ट्रावायलेट किरणों से भी अधिक ताकत रखता है।

(७) **यज्ञ में दी गई आहुति के दो रूप—**

पहला— पर्यावरण की शुद्धि करता है तथा शारीरिक रोग दूर करता है।

दूसरा— मनुष्य के शरीर में प्रवेश करके, सूक्ष्म शरीर में बैठ जता है। मृत्यु के पश्चात् आहुतियों का यह भाग, सूक्ष्म शरीर में लिपटे हुए आत्मा को ऊपर उठाकर उस लोक में ले जाता है, जिसकी इच्छा से आहुतियां डाली गई थीं—महर्षि याज्ञवल्क्य। पूर्वजों की आज्ञा है— "प्रातः सायं, दोनों काल यज्ञ करो, जिससे कि आहुतियों का उपरोक्त दूसरा भाग अधिक से अधिक मात्रा में एकत्रित हो सके।"

10. हवन का पात्र एवं उसका वैज्ञानिक आधार

(१) **आकार**—जिस पात्र में हवन (अग्निहोत्र) किया जाता है, उसे हवन कुंड कहते हैं। वर्तमान काल में इस पात्र का आकार प्रायः चौकोर होता है। इसके ऊपर की चौड़ाई व गहराई १२ या १६ अंगुल और नीचे का परिमाण ३ या ४ अंगुल होता है। दूसरे शब्दों में इसके ऊपर की चौड़ाई, नीचे की चौड़ाई से चार गुणा होती है।

(२) **वैज्ञानिक आधार एवं महत्त्व**—हवन कुंड का वैज्ञानिक आधार एवं महत्त्व हम पिरामिड द्वारा सहजतया समझ सकते हैं। पिरामिड (Pyramid) शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'Pyro' (अर्थात् अग्नि) और 'Amind' (अर्थात् बीच में) से मिलकर बना है। इसका अर्थ है—वह आकार जिसके बीच में अग्नि हो (fire

in the middle)। इस प्रकार पिरामिड एक प्रकार का उल्टा रखा हुआ अग्निपात्र या हवन कुंड का ही रूप है।

मिश्र (Egypt) के हज़ारों वर्ष पुराने पिरामिड विश्व के सात आश्चर्यों में से एक हैं। पिरामिड की आश्चर्यजनक विशेषता यह है कि उसमें प्रकृति की अनेक प्रकार की विद्युत चुम्बकीय शक्तियां (electromagnetic powers) समाविष्ट रहती हैं। उन्हीं शक्तियों का यह चमत्कारिक प्रभाव है कि पिरामिड के आकार में रखे खाद्य पदार्थ—दूध, फल आदि कई दिन तक ख़राब नहीं होते। इस आकार में रखे शव (dead bodies) सड़ते-गलते एवं दुर्गन्ध नहीं देते। पिरामिड के आकार के बने भवनों में, मानसिक रूप से अशान्त व्यक्तियों को भी अनोखी शान्ति का अनुभव होता है। वास्तव में पिरामिड—आकार में विद्युत चुम्बकीय शक्तियां केन्द्रीभूत (centralise, focus) होकर अन्दर रखे पदार्थों का संरक्षण करती हैं।

जिस प्रकार पिरामिड प्राकृतिक चुम्बकीय शक्तियों का केन्द्रीकरण (Centralisation, focussing) करके वस्तुओं को प्रभावित करता है, उसी प्रकार हवनकुंड अंतरिक्ष की विद्युतचुम्बकीय शक्तियों का विकेन्द्रण (decentralisation) करके उनका आसपास के वायुमण्डल में प्रसारण करता है। यह विकेन्द्रीकरण होता है—मंत्र ध्वनियों द्वारा वायुमंडल में पैदा की गई थिरकन (Vibration) या कम्पन्न द्वारा। इसके अतिरिक्त हवनकुंड एक दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। वह है—हवन में डाली गई सामग्री, औषधीय जड़ी-बूटियों और घी आदि स्थूल पदार्थों का अग्नि द्वारा सूक्ष्म करके वायुमंडल में फैला देना। इस प्रकार, हवन से निकलने वाली वायु अमूल्य औषधीय गुणों से युक्त (full of valuable medicinal properties) होती है, जिसमें पदार्थों के औषधीय तत्त्व सूक्ष्म रूप में विद्यमान होते हैं। सूक्ष्म रूप में होने से वे अत्यधिक शक्तिशाली होकर, सम्पूर्ण वातावरण को परिशुद्ध,

रोग-कीटाणु मुक्त एवं स्वास्थ्य-अनुकूल बनाने में सक्षम होते हैं और हवन करने वालों एवं उस वातावरण में रहने वाले लोगों के रक्त में प्रवेश कर उनको निरोग और प्रदूषित वातावरण को स्वास्थ्यप्रद एवं हितकारक बनाते हैं। यही है—हवन के पात्र का वैज्ञानिक आधार एवं महत्त्व तथा हवन द्वारा चिकित्सा (Home Therapy) का रहस्य।

11. हवन की अग्नि द्वारा पदार्थों की गुणवत्ता एवं उनके प्रभाव में वृद्धि के उदाहरण

अग्नि द्वारा पदार्थों की गुणवत्ता (quality) एवं प्रभाव (effect) में कितनी अधिक वृद्धि, बढ़ोत्तरी हो जाती है, इस तथ्य के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं—विभिन्न रोगों में दी जाने वाली भापें, आयुर्वेदिक भस्में और उच्च पोटेंसी की होम्योपैथिक दवाएं, जिनकी चर्चा नीचे प्रस्तुत की जा रही है—

(१) **भापों के रूप में पदार्थ की गुणवत्ता में वृद्धिः** खांसी-जुकाम के रोगी को डाक्टर लोग प्रायः युक्लिपटस आयल की भाप लेने को कहते हैं। वे भाप के इस्तेमाल को क्यों अधिक उपयोगी बताते हैं? केवल तेल को ही क्यों नहीं? ऐसा इसलिए, चूंकि तेल को जब उबलते पानी में डाला जाता है, तब पानी में से निकलने वाली भाप, उस तेल को सूक्ष्म परमाणुओं में विभक्त करके, उसको अणु-अणु में तोड़कर उसे अधिक शक्तिशाली, अधिक गुणकारी एवं अधिक उपयोगी कर देती है। इसी प्रकार हवन की अग्नि भी हवन में डाले गए पदार्थों को सूक्ष्म रूप में बदल कर उन पदार्थों की गुणवत्ता को कई गुणा बढ़ा देती है।

(२) **भस्म के रूप में पदार्थ की गुणवत्ता में बढ़ोतरी**—आयुर्वेद में लोह, अभ्रक, रजत, सुवर्ण आदि को अग्नि का ताप देकर उनकी भस्में बनाई जाती हैं। यह भस्में शतपुटी सहस्रपुटी, शत-सहस्रपुटी कहलाती हैं। वही लोह, अभ्रक आदि धातुएं जो अपने स्थूल रूप में औषधी का काम नहीं करतीं, जब अग्नि का ताप देकर उनको

सूक्ष्म रूप में (भस्मों के रूप में) परिवर्तित किया जाता है, तब वे शक्तिशाली औषध का काम करती हैं। उपलों की अग्नि का ताप देने से उनमें सुप्त रोग-निवारक, रोग को मिटाने वाली शक्ति जाग जाती है और वही धातु फिर कठिन से कठिन रोगों को दूर करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। अग्नि का जितना अधिक ताप दिया जाता है, भस्म भी उतनी अधिक सूक्ष्म एवं शक्तिशाली वन जाती है, जैसे शतपुटी भस्म की अपेक्षा सहस्रपुटी भस्म अधिक प्रभावी होती है और सहस्रपुटी की जगह शत-सहस्रपुरी की शक्ति और भी अधिक शक्तिशाली हो जाती है।

इस प्रकार भस्मों का उदाहरण भी इस तथ्य को सुस्पष्ट करता है कि हवन की अग्नि, सामग्री आदि के पदार्थों को सूक्ष्म रूप में बदल कर उनकी गुणवत्ता को कई गुणा बढ़ा देती है।

३. होम्योपैथी की ऊंची पोटेंसी की दवाएं– होम्योपैथी की दवाएं भी जब स्थूल रूप से सूक्ष्म रूप में बदली जाती हैं, जैसे किसी दवा के मदर टिंक्चर का जब विशेष क्रियाओं (विचूर्णीकरण Trituration तथा आलोडन Succession) द्वारा शक्तिकरण (Potentization) किया जाता हैं, तब वह सूक्ष्म रूप में आकर शक्तिशाली बन जाती है। इस प्रकार, दवा जितनी अधिक सूक्ष्म होगी (अधिक पोटेंसी की होगी) वह उतनी अधिक शक्तिशाली होगी, जैसे ३०,१००,१०००,१००००,१००००० पोटेंसी की दवाईयां उत्तरोत्तर अधिक शक्तिशाली होती हैं।

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस प्रकार एलोपेथी, आयुर्वेद और होम्योपैथी चिकित्सा-प्रणालियों में दवाओं को सूक्ष्म रूप में बदलकर, उन्हें अधिक शक्तिशाली, प्रभावोत्पादक वनाया जाता है, उसी प्रकार हवन द्वारा, विभिन्न औषधीय पदार्थों को हवन की अग्नि में डालकर, उन पदार्थों को सूक्ष्म रूप में परिणत कर, कई गुणा अधिक व्यापक और शक्तिशाली कर दिया जाता है।

इस तथ्य को कि– 'अग्नि अपने में जलाई गई वस्तु को करोड़ों गुना अधिक सूक्ष्म और शक्तिशाली बनाकर फैला देती है– फ्रांस के डाकटर हैफकिन और मद्रास के सेनेटरी कमिश्नर डॉ. कर्नल किंग आई.एम.एस. ने भी माना। उनका कहना है कि आग में घी जलाने से कोसों दूर तक के कीटाणु मर जाते हैं। घी, चावल, केसर आदि से धुएं के विष का नाश हो जाता है और वायु में घुले जहर वर्षा के साथ जमीन में चले जाते हैं और खाद बनकर उपयोगी हो जाते हैं।

12. हवन द्वारा स्वास्थ्य-सुधार एवं रोग-उपचार

(१) **हवन में अनेक प्रकार के रोग-निवारक सुगन्धित औषधीय पदार्थ** डाले जाते हैं, जैसे—घी, केसर, कस्तूरी, अगर, तगर, चन्दन, जायफल, जावित्री, इलायची, जटामांसी, गुग्गुल, लौंग, नारगमोथा, तुलसी आदि।

ये औषधीय पदार्थ अग्नि में जलने से वायु में व्याप्त हो जाते हैं और उस वायु को औषध रूप कर देते हैं। जब वही वायु श्वासों द्वारा हमारे फेफड़ों में पहुंचती है, तब वह रक्त की शुद्धि करती है और स्वास्थ्य-लाभ पहुंचाती है। हवन की इस वायु का अधिक महत्त्व इसलिए है, चूंकि इस वायु में अनेक औषधियों के रोग दूर करने वाले तत्त्व भी सूक्ष्म रूप में विराजमान होते हैं। वैसे तो साधारण हवन-सामग्री सभी के स्वास्थ्य को सुधारती और रोग मिटाती है। परन्तु अलग-अलग रोगों के उपचार के लिए सामग्री में विशेष प्रकार की औषधियां मिलाकर विशेष लाभ प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक ऋतु में उस ऋतु में प्रयोग की जाने वाली सामग्री में विशेष प्रकार की औषधियां सम्मिलित करने का भी विधान है, ताकि उस ऋतु में होने वाले रोगों से बचाव हो सके।

(२) **हवन द्वारा रोग-उपचार एवं स्वास्थ्य-सुधार के अनेक उदाहरण :** हवन की अग्नि में जो पदार्थ डाले जाते हैं, वे जलकर,

सूक्ष्म रूप धारण कर वायु को औषधीय बनाकर, किस प्रकार रोगों का उपचार करते हैं, यह निम्न उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है—

(*i*) **शक्करः** फ्रांस के विज्ञानवेत्ता अध्यापक ट्रिलवर्ट के अनुसार, जलती हुई शक्कर में वायु शुद्ध करने की इतनी शक्ति है कि इससे क्षय, चेचक, हैज़ा आदि बीमारियां तुरन्त नष्ट हो जाती हैं। दूसरा, शक्कर के जलने पर उससे निकलने वाली फारमैल्डिहाइड गैस कृमियों का नाश करती है। एक अन्य विद्वान् लिखते हैं कि अग्नि में शक्कर जलाने से 'हे फीवर' नहीं होता।

(ii) **मुनक्का, किशमिश आदि फल**—डॉ. एम. ट्रेक्ट ने मुनक्का व किशमिश आदि फलों को जलाकर देखा, तो पाया कि उनके धुएं से टाइफ़ाइड रोग के कीटाणु ३० मिनट में नष्ट हो गए।

(iii) **घी :** फ्रांस के डॉ. हैफ्किन का कहना है कि घी के जलने से कई रोगों के कीटाणु मर जाते हैं।

(iv) **केसर :** हवन की सामग्री में डाले जाने वाले सुगन्धित द्रव्यों में एक द्रव्य 'केसर' भी है। केसर के विषय में मद्रास के Sanitary Commission Dr. Colonel किंग आई.एम.एस. का कहना है कि घी और केसर में हवन करने से प्लेग जैसी भयंकर बीमारी को भी नष्ट किया जा सकता है।

(v) **श्वेत चंदन**—हवन में डाला गया श्वेत चंदन सुज़ाक तथा आतशक जैसे भयंकर रोगों को नष्ट करने में सहायक है।

(vi) **तुलसी**—हवन में डाले जाने वाले तुलसी के पत्ते मलेरिया रोग को मिटाते हैं।

(vii) **दूध, बादाम, केला, नाशपाती, सेव, नारियल का तेल** आदि पुष्टिकारक वस्तुओं के जलाने से, उनके सूक्ष्म अणु वायु में फैल कर जहां अनेक रोगों को दूर करते हैं, वहां पुष्टि भी करते हैं। (पुस्तक-संस्कार चंद्रिका)

(viii) **नारियल**–सामग्री में नारियल आदि डालने से कुछ तेल वाष्प रूप में निकलते हैं, जिनके विषय में परीक्षणों से सिद्ध हुआ है कि उनके कारण जुएं नहीं पड़तीं, अगर देर तक तेल की वाष्प में रहें, तो मर जाती हैं।

(ix) **सामग्री से उत्पन्न होने वाली फारमैल्डीहाइड (Formaldehyde) गैस एक शक्तिशाली कीटाणुनाशक**– इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कैमिस्ट्री विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यप्रकाश डी. एस.सी. ने हवन सामग्री का विश्लेषण करके यह पाया कि सामग्री के जलने पर फारमैल्डीहाइड गैस निकलती है। यह गैस एक शक्तिशाली कीटाणुनाशक है–ऐसा ल्यू तथा फिशर (Lew & Fisher) ने अपनी खोज के दौरान पाया। इसी प्रकार केम्वीयर तथा ब्राचेट (Cambier & Brochet) ने भी परीक्षणों से सिद्ध किया कि फारमैल्डीहाइड गैस से घर के गर्दे में से भी कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। स्लेटर तथा रायडिल (Slater and Rideal) ने फारमैल्डीहाइड का घोल बनाकर परीक्षण किया तो पाया कि इस **गैस से टाइफ़स, बी. कोलाई तथा कोलन के कीटाणु १० मिनट से भी कम समय में नष्ट हो गए।**

कुछ ऐसे भी परीक्षण किए गए, जिनमें धागों को भिन्न-भिन्न रोगों के कीटाणुओं में डुबोकर, उन पर फारमैल्डीहाइड गैस का वाष्प डाला गया। परिणाम आशातीत तथा आश्चर्यजनक निकला–इन धागों पर टाइफ़स तथा वी.कोलाई का कुछ असर ही नहीं हो सका क्योंकि उन पर फारमैल्डीहाइड का वाष्प अपना प्रभाव कर चुका था।

(x) **क्षय रोग का हवन द्वारा इलाज**–(क) **डॉ. फुन्दन लाल** (.D. London) एक एलोपेथिक डाक्टर थे। वे सब कुछ छोड़कर यज्ञ (हवन) द्वारा क्षय-रोग (T.B.) की चिकित्सा करने में जुट गए। उन्होंने १६२६ में जवलपुर में एक टी.बी. सेनिटोरियम की भी स्थापना की, जिसमें उन्होंने ८० प्रतिशत T.B. के रोगियों

को स्वस्थ किया। उन्होंने हवन की गैस के संबंध में अनेक परीक्षण भी किए और क्षयरोगियों को हवन-चिकित्सा से ठीक किया। वे अपनी पुस्तक 'यज्ञ-चिकित्सा' में लिखते हैं—"जो लोग नित्यप्रति हवन करते हैं उनके शरीर में इस प्रकार के रोग उत्पन्न ही नहीं हो सकते जिनमें किसी भीतरी स्थान में पीप उत्पन्न हो, और यदि कहीं उत्पन्न हो तो नित्य प्रति हवन गैस पहुंचाने से मवाद तुरन्त सूख जाएगा और क्षत (घाव) अच्छा हो जाएगा।"

उन्होंने एक और परीक्षण के दौरान, हवन-गैस को पानी में मिलाकर उससे बाहर के सड़े-गले क्षत धोए। वे लिखते हैं: इसका परिणाम यह हुआ कि पहले किसी-किसी क्षत से पीप अधिक निकली, फिर क्षत बहुत शीघ्र भरकर सूख गया। पहले बहुत अधिक पीप आने का कारण यह था कि भीतर का गहराई तक का पीप बाहर निकल आया और फिर क्षत भर गया।

(ख) **डॉ. अंजनी चौहान** के अनुसार, ऐलोपैथी में ऐसी किसी भी औषधी का आविष्कार नहीं हुआ है जो शरीर को हानि पहुंचाए विना क्षय रोग के कीटाणुओं को मार सके। कई डाक्टरों का कथन है कि क्षयरोग की प्रचलित औषधियां ज़हरीली होने के कारण शरीर को नुकसान पहुंचाती हैं। **डॉ. फुंदन लाल एम.डी. के अनुसार, वेदोक्त विधि पूर्वक हवन-यज्ञ करना ही क्षय रोग की चिकित्सा और उसकी रोकथाम का सही उपचार है।**

(ग) **ऋग्वेद में यज्ञ द्वारा क्षय-रोग की चिकित्सा** के संबंध में मंत्र है—

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमजाद् यक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।

ऐ मनुष्य! तेरे जीवन को सुखमय बनाने के लिए तुझे यज्ञ की हवि द्वारा अज्ञातरोगों तथा राज्यक्ष्मा से मुक्त करता हूं।

(घ) **पुराणों में भी यज्ञ द्वारा क्षय रोग के उपचार का वर्णन**—लिंग पुराण अध्याय ४६, श्लोक ८ से १३ तक विभिन्न प्रकार के रोगों के शमनार्थ यज्ञोपचार का वर्णन है। यथा—

षण्मासं तु घृतं हुत्वा सर्वव्याधिविनाशनम्।
राज्यक्षमा तिलैर्होमान्नश्यते वत्सरेण तु।
यवहोमेन चायुष्यं घृतेन च जयस्तदा।

अर्थात् ६ महीने तक घी का हवन करने से सब प्रकार की व्याधियों का नाश होता है। एक वर्ष तक तिल का हवन करने से राजयक्ष्मा अर्थात् टी.बी. का नाश होता है। जौ का हवन करने से आयु वृद्धि एवं घी के हवन से जय प्राप्त होती है।

(ङ) **देवी भागवत** ११/२४-२६ में स्पष्ट उल्लेख है—

वचाभिः पयशक्तिभिः क्षयं हुत्वा विनाशयेत्।
मधुत्रितयहोमेन राजयक्ष्मा विनश्यति॥
लताः पर्वसु विच्छिद्य सोमस्य जुहुयाद्द्विजः।
सोमे सूर्येण संयुक्ते प्रयोक्ताः क्षयशांतये॥

अर्थात् दूध से बच को अभिषिक्त करके हवन करने से क्षयरोग दूर होता है। दूध, दही और घी— इन तीनों को होमने से भी राजयक्ष्मा नष्ट होता है। अमावस्या के दिन सोमलता की डालों को गांठों पर से अलग करके हवन करने से क्षय रोग दूर हो जाता है।

इन श्लोकों में स्पष्ट है कि क्षयरोग चाहे प्रारंभिक अवस्था में हो अथवा बहुत बढ़ गया हो, चतुर्थ अवस्था में पहुंच गया हो, यहां तक कि उसके कारण रोगी बिल्कुल मरणासन्न हो गया हो तो भी यज्ञोपचार के द्वारा वह ठीक हो सकता है और सौ वर्ष तक जीवित रह सकता है।

(च) **अथर्ववेद की स्पष्टोक्ति** है—

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमंताञ्छतमु वसंतान्।
शतं त इंद्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम्।

अर्थात् हे हवि-चिकित्सा द्वारा क्षय रोग से लाभ किये हुए मनुष्य! तू दिनोंदिन बढ़ता हुआ सौ हेमंतों तक, और सौ वसंतों तक जीवित रह। वायु, अग्नि, सूर्य और बृहस्पति पर्जन्य ने सौ

वर्ष की आयु देने वाली हवि की सहायता से पुनः तुझे सौ वर्ष की आयु प्राप्त करा दी है।

(xi) **हवन द्वारा मिरगी रोग का सफल उपचार**—पूना विश्वविद्यालय के प्रायोगिक मनोविज्ञान विभाग में मानसिक रूप से अविकसित बालकों पर 'गृह चिकित्सा के मनोवैज्ञानिक प्रभाव' विषय पर शोध कर रहे अमेरिकी शोध छात्र श्री बेरी रेयनर ने यूनी वार्ता को एक भेंट में बताया कि उन्होंने महाराष्ट्र में शोलापुर के पास अम्बाजोगई ग्राम में अग्निहोत्र का प्रयोग किया और देखा कि कुछ बालक जो मिरगी के रोग से पीड़ित थे ठीक हो गए।

अग्निहोत्र से मानसिक रूप से अविकसित बालकों का बौद्धिक स्तर (I.Q.) भी बढ़ गया। इन बच्चों की भोजन की असामान्य मात्रा भी सामान्य हो गई। अनेक ने तो धूम्रपान करना भी छोड़ दिया। *—पंजाब केसरी 13-2-1983*

(xii) **हवन द्वारा मानसिक तनाव से मुक्ति**—गाय के घी के साथ सामग्री की, मन्त्रोच्चार के साथ जब आहुति दी जाती है तो निम्न प्रकार की चार गैसों का पता चला है— (१) एथिलिन ऑक्साइड (२) प्रापिलीन ऑक्साइड (३) फार्मेल्डिहाइड (४) बीटा प्रापियों लेक्टोन। आहुति देने के पश्चात गो घृत से एसिटिलीन निर्माण होता है। यह एसिटिलीन प्रखर उष्णता की ऊर्जा है, जो दूषित वायु को अपनी ओर खींचकर उसे शुद्ध करती है। गोघृत से उत्पन्न इन गैसों में, कई रोगों तथा मन के तनावों को दूर करने की अद्भुत क्षमता है। *—अग्निहोत्र*

(xiii) **हवन द्वारा प्लेग के रोग पर काबू पाने में सफलता**—इस तथ्य से तो सब परिचित हैं कि सूरत-गुजरात में, दिल्ली के कुछ स्थानों पर जहां-जहां पर भी प्लेग फैली थी, हज़ारों टन हवन की सामग्री स्वयं सरकार के द्वारा जलाने के लिए बांटी गई। स्वयंसेवी संस्थाओं ने बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन करके

संक्रामक रोगों का सामना किया और सफलता प्राप्त की। जिन क्षेत्रों में अचानक बाढ़ आदि का दैवी प्रकोप हो जाता है वहां भी वाद में शुद्धिकरण के लिए यज्ञ-हवन का आश्रय लिया जाता है।

(xiv) **हवन की राख द्वारा रोग उपचार**—जर्मनी की फार्मासिस्ट (औषध निर्माता) श्रीमती मोनिका येले ने अमेरिका के एक समाचार पत्र संवाददाता के साथ वार्तालाप करते हुए बताया—

(क) **सूजन :** अग्निहोत्र भस्म की शक्ति का अनुभव हमें अत्यन्त विचित्र रूप से हुआ। अपने बगीचे में हम रोज़ अग्निहोत्र की ठण्डी राख फेंक दिया करते थे। जहां राख डालते थे केवल उस जगह के पेड़-पौधों में आश्चर्यजनक विकास हो रहा था। उनमें लगे कीट नष्ट होने लगे। आगे अधिक अध्ययन के बाद हमें ज्ञात हुआ कि यह भस्म सूजन (Inflammation of Fungus of the Skin) पर अत्यन्त लाभदायक है।

इस सिलसिले में श्रीमती येले का कहना है कि **अग्निहोत्र भस्म में जव इतनी शक्ति है तो कल्पना कीजिए अग्निहोत्र की शक्ति कितनी अधिक होगी। केवल अपने घर में नित्य अग्निहोत्र करना ही सबसे बड़ी औषधि है, उसी का महत्त्व है।** परन्तु अग्निहोत्र की शेष बची राख भी प्रभावशाली है— इसका हमने दर्शन किया है।"

(ख) **चर्म रोग, घाव, पुराना पेट दर्द**—उक्त फार्मासिस्ट श्रीमती येले तथा उनके पति ने अत्यन्त लगनपूर्वक अध्ययन एवं खोज द्वारा अग्निहोत्र भस्म से अनेक दवाइयां निर्मित कीं। अग्निहोत्र भस्म से बनी टेबलेट्स, कैप्स्यूल्स, मलहम (paste), आइड्रॉप्स आदि अनेक प्रकार से दवाओं का निर्माण करके विभिन्न रोगों पर उपचार किया। अनेक वर्षों से ठीक न होने वाले घाव केवल अग्निहोत्र भस्म लगाने से ठीक हुए। पुरानी पेट दर्द की शिकायत कुछ ही समय में ठीक हुई, चर्म रोगों पर तो इसका

चमत्कारिक प्रभाव होता है।

अग्निहोत्र भस्म का यह विलक्षण आरोग्यदायक प्रभाव देखकर स्थानीय रसायनशाला ने अपनी लेबोरेटरी में अग्निहोत्र भस्म से वनी दवाओं का वड़े पैमाने पर उत्पादन शुरु किया, और लेबल लगी डिब्बियों में व शीशियों में ये औषधियां रोगियों में बिना मूल्य वितरित की जा रही हैं।

इस विषय में श्रीमती येले कहती हैं कि औषधियां बनाकर बेचना हमारा उद्देश्य नहीं है। आप स्वयं अग्निहोत्र करें । अपने अग्निहोत्र के भस्म से ये दवाइयां अपने घर में ही बनावें। केवल अग्निहोत्र करने से ही आपको अन्य सभी दवाइयों से छुटकारा मिल जाता है।

—अग्निहोत्र

(xv) **हवन की राख कृषि के लिए अत्यन्त लाभप्रद**—अमेरिकी वैज्ञानिक माइक विलियन ने अपनी खोज के आधार पर कहा है कि हवन से कृषि को अत्यधिक लाभ पहुंचता है। उनका कहना है कि हवन अत्यन्त प्राचीन और वैज्ञानिक पद्धति है। जहां नियमित रूप से हवन होता है, वहां पौधे वहुत जल्दी फलते-फूलते हैं और उनके फल फूल और पत्तों के स्वाद, रंग और पौष्टिकता में बहुत सुधार हो जाता है। हवन की राख ठंडी हो जाने पर जव खेत में बिखेरी जाती है और वीजों तथा नन्हें पौधों से उसका स्पर्श होता है, तव पौधे वड़ी तेज़ी से वढ़ते हैं और निरोग तथा हृष्टपुष्ट होते हैं।

पौधे के लिए नितान्त आवश्यक आर्द्रता (नमी) किसी और भूमि में उतने समय तक नहीं वनी रहती जितने समय तक उस भूमि में—जिस पर यज्ञ (हवन) के वातावरण का प्रभाव पड़ा हो। इस भूमि में यह प्रभाव यज्ञ में घी के प्रयोग के कारण उत्पन्न हो पाता है। इस प्रकार भूमि उपजाऊपन (उर्वराशक्ति Fertility) बढ़ाने में हवन अत्यधिक सहायक है।

(xvi) **हृदय रोग का हवन द्वारा सफल इलाज**—आचार्य

वेदश्रमी जी की पुस्तक 'यज्ञ द्वारा चिकित्सा' में वर्णित दो घटनाएं नीचे प्रस्तुत हैं, जिनसे हृदय रोग में भी हवन चिकित्सा के महत्त्व का पता चलता है–

पहली घटना–देवास में श्रीरामचन्द्र सोनी को १९७३ में हृदय रोग का तीसरा आक्रमण हुआ था। १० दिन बाद ही उनके मामा के यहां गायत्री महायज्ञ था। डॉक्टरों ने पूर्ण विश्राम की सलाह दे रखी थी, परन्तु वे यज्ञ में प्रतिदिन ५ घंटे बैठते। उन्होंने ३२ दिन यज्ञ में पूर्ण भाग लिया। कुछ भी कष्ट नहीं हुआ। यज्ञ में बैठने से उन्हें उत्तरोत्तर शक्ति प्राप्त होती गई और वे अब तक स्वस्थ हैं।

दूसरी घटना–इसी प्रकार सन् १९७६ में श्री वी.एन. वालासरिया, प्रेसीडेंट दिग्जाम मिल्ज़, जामनगर वालों को हृदय रोग का आक्रमण हुआ था। एतदर्थ उनके यहां यज्ञ ८ दिवस का मैंने किया था। यज्ञ प्रातः ४५-४५ मिनट का २४-२४ गायत्री मंत्र एवं मृत्युंजय मंत्रों से होता है। समिधा बिल्व, पीपल, शमी, आम्र की प्रयोग की जाती थीं। गोघृत, शहद, अर्जुन , त्वक्, अपामार्ग, अश्वगन्ध, गूगल, कपूर, काचरी, टगर, अगर, जटामांसी, तुलसी के बीज, कमल गट्टा आदि का यज्ञ में प्रयोग किया जाता था। उन्हें भी ८ दिन में यज्ञ द्वारा चमत्कारिक अद्भुत लाभ हुआ। प्रारम्भ में उन्होंने कहा कि वे ५ मिनट भी बैठने में असमर्थ हैं। अन्तिम दिवस तक उनमें अपूर्व शक्ति प्राप्त हो गई और सम्पूर्ण मिल का परिभ्रमण पैदल ही किया जबकि वे सदा मोटर गाड़ी में ही किया करते थे।

(xvii) **पुष्टिकारक पदार्थों का हवन की औषधीय वायु द्वारा सेवन अधिक स्वास्थ्यप्रद एवं रोगनाशक**–पुष्टि कारक पदार्थ शरीर को पुष्टि एवं बल देते हैं। अतः उन्हें अवश्य खाना चाहिए। परन्तु उससे भी अधिक उपयोगी है उन पदार्थों का हवन में जलाकर, हवन की सुगन्धित वायु का सेवन करना। इसका कारण

है—जलाने के दो विशेष गुण। **पहला** यह कि खाने में सम्भव है कि आप पुष्टिकारक पदार्थ पाचन तंत्र के कमज़ोर या विकृत होने से पूरी तरह पचा न पाएं। **दूसरा** यह कि आप पुष्टिकारक पदार्थ अपनी शक्ति से अधिक खाकर लाभ के स्थान पर हानि उठाएं। पर हवन करने से इन दोनों बातों का कोई खटका नहीं, चूंकि पौष्टिक पदार्थ के परमाणु (अग्नि में जलने पर पदार्थ परमाणु रूप हो जाता है) श्वास द्वारा फेफड़ों में जाकर सीधे रक्त में पहुंचते हैं और पाचनतंत्र पर कोई बोझ नहीं डालते।

(xviii) **जर्मनी की Research Report के अनुसार अग्निहोत्र चिकित्सा (Homa Therapy) के द्वारा अनेक सफल इलाज**— अग्निहोत्र के धुएं एवं सामग्री से जुकाम, सिर दर्द, पुराना बुखार, साइनस, रक्त प्रदर, सोराइसिस, खाल के छाले, पेचिश, दाद, टांसिल, जोड़ों के दर्द आदि रोग दूर हुए।

(सार्वदेशिक— जुलाई, १९८३)

13. हवन द्वारा पर्यावरण की शुद्धि एवं कृषि को लाभ

वर्तमान युग में भौतिकवाद चरम सीमा पर है। भयंकर प्रदूषण एवं प्रकृति के अविवेकपूर्ण दोहन द्वारा प्राकृतिक चक्रों (Ecological Cycles) का संतुलन बिगड़ चुका है। परिणामतः कहीं पर असमय वर्षा, कहीं पर अतिवृष्टि कहीं पर अनावृष्टि और कहीं पर तेज़ाबी वर्षा हो रही है। सदा से ठंडे रहने वाले प्रदेशों का तापमान बढ़ रहा है, जिससे धरती पर प्राणी जीवन और वनस्पति जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। ओजोन की परत कमज़ोर हो जाने से, पराबैंगनी किरणों के कारण होने वाली व्याधियां बढ़ रही हैं। रासायनिक खाद्य एवं विषैले कीटनाशकों के अनियंत्रित एवं अविवेकपूर्ण प्रयोग द्वारा उपजाऊ भूमि बंजर भूमि में परिवर्तित हो रही है और उपयोगी जीवाणु एवं कीटकों का विनाश हो रहा है। खाद्य पदार्थ सत्त्वहीन एवं

विषयुक्त होते जा रहे हैं। यद्यपि हमारे पर्यावरण में स्वाभाविक रूप से सल्फर, नाइट्रोजन, कार्बनडाइआक्साइड, हाइड्रोजन तथा एसपीएम (सस्पैंडिड पार्टीकुलेट मैटर) रहते हैं। परन्तु यह जीवन के लिए उस समय घातक हो जाते हैं, जब गाड़ियों तथा फैक्टरियों से निकलने वाले आक्साइड जैसे कि सल्फरडाइआक्साइड (SO_2), नाइट्रसआक्साइड (N_2O) व मोनोआक्साइड (CO) तथा लैड की मात्रा को अनुपात से अधिक बढ़ा देते हैं। फटती हुई ओज़ोन लेअर, धुएं में बढ़ते हुए वैश्विक तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) तथा धुएं के बढ़ते हुए लैड युक्त एमपीएम, जो मनुष्यों के लिए कैंसर जैसे भयंकर रोगों का कारण बन रहे हैं, इनसे शीघ्र बचने का सरल व सर्वोत्तम साधन केवल हवन-यज्ञ है, जिसकी चर्चा वैदिक वैज्ञानिक व स्वतंत्रता के प्रथम मंत्रदाता **आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द** ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में आज से लगभग १२५ वर्ष पूर्व की थी। हवन की इस वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा पर्यावरण शुद्ध होता है, भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है, रोग मिटते हैं, वर्षा की कमी दूर होती है तथा मानव का शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक उत्थान होता है।

श्री माधव आश्रम भोपाल की सुश्री नलिनी माधव जी का कहना बिल्कुल ठीक है कि आयुर्वैदिक, एलोपैथिक, होम्योपैथिक, मनोवैज्ञानिक आदि कई प्रकार की पद्धति वाले मौजूद हैं, जो शरीर और मन की चिकित्सा कर रहे हैं **पर पर्यावरण की चिकित्सा** करने वाले दिखाई नहीं देते। अग्निहोत्र (हवन) करना पर्यावरण का सीधा इलाज है— Direct Treatment है।

हवन (अग्निहोत्र) हर सम्प्रदाय, समाज या देश के लिए ज़रूरी—सुश्री नलिनी माधव जी का यह कहना भी तर्कसंगत एवं यथार्थ है कि हवन एक प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है और चिकित्सा सबके लिए समान होती है, चाहे वह हिन्दु हो या किसी अन्य सम्प्रदाय का। बिना भेदभाव के सबके लिए लाभकारी शुभ कार्य में सभी को सहयोगी बनकर पर्यावरण-प्रदूषण को रोकना

और समाप्त करना चाहिए।

यदि हवन के पश्चात् पांच बार आभ्यांतर कुंभक या दस बार उद्गीथ प्राणायाम किया जाए, तो उससे यज्ञीय एंटीसैप्टिक गैसिस हमें एक ऐसा प्रतिरोधी कवच प्रदान करती हैं, जो पूरे दिन प्रदूषण तथा रोग के कीटाणुओं से हमारी रक्षा करता है।

हवन द्वारा पर्यावरण व वायु-शुद्धि तथा कृषि रक्षा के उदाहरण एवं तथ्य

हवन किस प्रकार पर्यावरण में फैली ज़हरीली गैसों, अनेक विषैले तत्त्वों एवं रोगों के कीटाणुओं आदि से हमारी रक्षा करता है, पर्यावरण एवं कृषि के लिए लाभप्रद है– इसके कुछ उदाहरण एवं तथ्य नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं :

(१) जीवाणुओं तथा ज़हरीली गैसों की मात्रा में हवन द्वारा भारी कमी– गोरखपुर विश्वविद्यालय में किए गए एक शोध के दौरान पाया गया कि हवन (यज्ञ) के प्रभाव से पानी व हवा में पाए गए जीवाणुओं और विषैली गैसों की मात्रा में भारी गिरावट हुई, जो इस प्रकार थी–

हवन के प्रारम्भ होने से पूर्व की स्थिति	हवन के वाद की स्थिति
(i) पानी के सैम्पल में जीवाणुओं की संख्या = 4500 जीवाणु प्रति सौ मिली लिटर	1200 जीवाणु प्रति सौ मिली.। जीवाणुओं की बैक्टीरिया आक्सीजन डिमांड (B.O.D.) इतनी कम हो गई कि जिसकी कल्पना वैज्ञानिकों को स्वप्न में भी नहीं थी।
(ii) हवन से पूर्व, हवा में सल्फर डाइआक्साइड (SO_2) की मात्रा = 3.36 माइक्रोग्राम	हवन के पश्चात् सल्फर डाइआक्साइड की मात्रा रह गई मात्रा 0.8 माइक्रोग्राम नोट : सल्फर डाइआक्साइड वह

	जहरीली गैस है, जिससे कैंसर उत्पन्न होता है।
(iii) हवन के पहले हवा में नाइट्रस आक्साइड की मात्रा = 60 माइक्रोग्राम	हवन के प्रभाव से विषैली गैस की मात्रा घटकर रह गई केवल 1.02 माइक्रोग्राम

—नवभारत टाइम्स दिनांक २४.१२.१९९५

(२) ज़हरीली गैस के दुष्प्रभाव से हवन ने की पूरी सुरक्षा— भोपाल गैस कांड (२-३ दिसम्बर १९८४) के दौरान दर्जनों लोगों की जानें गईं, कई अंधे व अपाहिज हो गए और बहुत संख्या में विविध रोगों के शिकार हो गए। परन्तु निम्न दो घटनाओं में जिन दो परिवारों ने यज्ञ की शरण ली, वे पूरी तरह सुरक्षित रहे—

(i) **पहली घटना**—२ दिसम्बर १९८४ की मध्य रात्रि में अपनी पत्नि त्रिवेणी (३६ वर्षीया) को उल्टी करते सुन श्री एस.एल. कुशवाहा (४५ वर्षीय अध्यापक) की नींद रात्रि में डेढ़ वजे खुल गई। शीघ्र ही वे स्वयं और उनके वच्चे भी खांसने लगे, उनकी आंखों में जलन होने लगी तथा सभी का दम घुटने लगा। घर से वाहर निकले तो मुहल्ले में हाय तौवा मची है। तभी किसी ने श्री कुशवाहा को लगभग एक मील दूर स्थित यूनियन कार्वाइड फैक्टरी से गैस रिसने की वात वताई।

वे सभी भीड़ के साथ भागने की सोच ही रहे थे कि त्रिवेणी ने कहा, हम सब अग्निहोत्र (हवन) क्यों न करें? उस पूरे परिवार ने यज्ञ किया और २० मिनट के अंदर ही (M.I.C.) गैस का दुष्प्रभाव समाप्त हो गया।

(ii) दूसरी घटना—३३ वर्षीय श्री एम.एल. राठौर अपनी पत्नी, चार बच्चों, मां तथा भाई के साथ भोपाल रेलवे स्टेशन के निकट रहते थे। राठौर विगत ५ वर्षो से नित्य प्रति यज्ञ कर रहे थे। उपरोक्त गैस कांड की भयंकर घटना घटने का पता लगते ही,

वे अपने पूरे परिवार को साथ बिठाकर यज्ञ करने लगे और मंत्रों के समाप्त होने पर त्र्यम्बक यज्ञ शुरु कर दिया। यज्ञ से उस परिवार पर भी (M.I.C.) गैस का कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा।

Vedic Light 5/85 , Hindu-Madras dt. 7.4.1985

(३) **हवन की राख द्वारा फसलों के समस्त रोगों का इलाज**–अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में स्थापित अग्निहोत्र विश्वविद्यालय ने अनेक प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया है कि रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं के प्रयोग के स्थान पर हवन-यज्ञ से फसलों के समस्त रोग दूर किए जा सकते हैं। विश्वविद्यालय ने मंत्रोच्चारण और घी की आहुतियों से **फसलों को चौगुना** करने में भी सफलता हासिल की है।

विश्वविद्यालय द्वारा, पौधों में लग जाने वाले कीटाणुओं के नाश के लिए यज्ञ की राख और गोबर के खाद के प्रयोग की सिफारिश की जाती है। **विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अपने अनुभव से बताते हैं कि– पानी में राख मिलाकर उसकी सिंचाई से पौधों के कीटों को नष्ट करने की शक्ति मिलती है और मंत्रोच्चारण के साथ की गई सिंचाई इस शक्ति को बढ़ा देती है।**

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने यह भी दावा किया है कि **यज्ञ का धुआं आठ किलोमीटर की दूरी तक अपना प्रभाव डालता है। वहां का वायु प्रदूषण समाप्त होकर उस क्षेत्र की फसलों का स्वस्थ विकास होता है।**

(४) **हवन के धुएं में 'एसिटिक एसिड'** होता है, जो फसल में रोग फैलाने वाले कीड़ों को नष्ट करता है।

(५) **हवन से 96 प्रतिशत हानिकारक कीटाणुओं के नष्ट होने का प्रमाण**–पूना के फर्ग्युसहन कालेज के जीवाणु शास्त्रियों ने एक प्रयोग किया। उन्होंने 36×22×10 घनफुट के एक हाल में एक समय का अग्निहोत्र किया। परिणामस्वरूप 8000 घनफुट वायु में कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदूषण का 77.5 प्रतिशत हिस्सा

खत्म हो गया। इतना ही नहीं इसी प्रयोग से उन्होंने पाया कि एक समय के ही अग्निहोत्र से 96 प्रतिशत हानिकारक कीटाणु नष्ट होते हैं। यह सब यज्ञ की पुष्टि कारक गैसों से ही सम्भव हुआ।

—अग्निहोत्र

(६) **हवन प्रदूषण के विरुद्ध एक अद्भुत शस्त्र**—जर्मनी के एक वैज्ञानिक जो कैमिस्ट्री बॉटनी मेडीसन रेडियोलॉजी के ज्ञाता हैं, एक कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट के स्नातक हैं तथा जर्मनी विश्वविद्यालय में पढ़ाते भी हैं, लिखते हैं कि "After I tested **Agnihotra** myself, it really seems that with **Agnihotra** you have a wonder weapon in your hands."

अर्थात् स्वयं अग्निहोत्र का परीक्षण करने के बाद मैंने पाया है कि सचमुच अग्निहोत्र के आचरण द्वारा मानो आपके हाथ में एक अद्भुत शस्त्र आ जाता है (प्रदूषण के विरुद्ध)।

—अग्निहोत्र

(७) **प्रदूषण दूर करने का आसान उपाय केवल हवनः** पर्यावरण संरक्षण संघ, महाराष्ट्र के प्रोफेसर एस.सी.मुले ने 'मेडिसिना एल्टरनेटिया' द्वारा आयोजित विश्व सम्मेलन में अग्निहोत्र (हवन) का प्रदर्शन करके बताया कि पृथ्वी और सूर्य के बीच का प्रदूषित वातावरण हवन द्वारा आसानी से अनुकूल बनाया जा सकता है। *—आर्यजगत् ४.१२.१९९४*

(८) **हवन की अग्नि साधारण अग्नि से बहुत अधिक वायुशोधक और कीटनाशक**—आग जलाने से रोगों के कीटाणु नष्ट होते हैं और वायु की शुद्धि होती है— इस सिद्धान्त का प्राचीन काल में भी बहुत प्रचार था। प्रसूति गृह (Maternity home) में सर्वदा आग बनाए रखना, रसोई घर में बैठकर भोजन करना आदि इसके प्रमाण हैं। प्रोफेसर मैक्समूलर की पुस्तक 'Physical Religion' में बताया गया है कि यवन देश के तत्त्ववेता ल्यूयकी ने आग को वायुशोधक माना है। प्रोफेसर मैक्समूलर लिखते हैं

कि आग जलाने की रीति गत शताब्दी तक स्काटलैंड में पाई जाती थी, तथा आयरलैंड और दक्षिणी अमेरिका में महामारी में अग्नि जलाने की प्रथा रह चुकी है।

यूरोप आदि में जितने आजकल वायु-शुद्धि के तरीके प्रचलित हैं, उनमें प्रायः फायर स्टोन (अंगीठियां) का उपयोग किया जाता है, ताकि दूषित वायु गर्म होकर फैले और हल्की होकर घर की खिड़की अथवा भिन्न मार्गों से दूर निकल जाए और उसी जगह शुद्ध वायु नीचे के द्वारों से अन्दर आ सके।

उपरोक्त वर्णन से यह बात भली प्रकार समझ में आ जाती है कि जब साधारण अग्नि के इतने लाभ हैं, तब हवन की अग्नि जिसमें अनेक औषधियां भी जलाई जाती हैं, क्यों न साधारण अग्नि से कई गुणा अधिक लाभदायक प्रभावी एवं रोगनाशक व वायुशोधक होगी?

(६) **हवन की सुगन्धित वायु में है–'ओज़ोन का भण्डार' एवं 'रोग-मुक्ति का चमत्कार'**– ओज़ोन (Ozone) एक प्रकार की तीव्र आक्सीजन (Oxygen) है– आक्सीजन से भी अधिक शुद्ध। यह निर्मल वायु में अधिक पाई जाती है और अशुद्ध वायु में वहुत कम। ओज़ोन की गंध बड़ी तीव्र होती है। जंगल, वाटिका और समुद्र की खुली हवा में सांस लेने से जो आनन्द प्रतीत होता है, वह ओजोन की विद्यमानता के कारण ही होता है। वैसा ही आनन्द हवन की सुगन्धित वायु में भी मिलता है, चूंकि हवन की वायु में भी ओज़ोन प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। इस प्रकार, **जो जीवनदायी गैस हम प्रायः समुद्र के किनारे जाकर प्राप्त कर सकते हैं, वह हम यज्ञ (हवन) के द्वारा घर बैठे ही पा लेते हैं।** हवन के द्वारा जो रोग के कीटाणुओं का नाश होता है, और स्वास्थ्य की वृद्धि होती है, वह भी हवन से निकलने वाली दो गैसों-ओज़ोन और फारमेल्डीहाइड के कारण ही हो पाता है।

हवन की वायु में ओज़ोन की अधिक मात्रा में पाया जाना

रोग उपचार की दृष्टि से वड़ा महत्त्वपूर्ण है। इस बात को हम यूं समझ सकते हैं—जैसे तपेदिक आदि का रोगी जव दवाओं से ठीक नहीं होता, तव डाक्टरों की सलाह से वह पहाड़ या समुद्र पर ले जाया जाता है। वहां पर ओज़ोन के अधिक मात्रा में सेवन करने से, उस रोगी का रोग दूर हो जाता है। इसी प्रकार, जब कोई रोगी नित्य प्रति हवन की वायु का सेवन करता है, तव घर बैठे ही उसे कठिन से कठिन रोग से मुक्ति मिल जाती है। यह है हवन की सुगंधित वायु का चमत्कारिक महत्त्व एवं अद्भुत लाभ।

(१०) हवन के धुएं द्वारा वातावरण की शुद्धि तथा अनाज व औषधियों की गुणवत्ता में वृद्धि—पश्चिमी वैज्ञानिकों ने रोगाणुओं के नाश के लिए दो पदार्थों (Antiseptic and Disinfectant) की खोज की है। परन्तु उनके वारे में यह समस्या है कि उनका सही प्रयोग केवल एक कुशल वैज्ञानिक ही कर सकता है। यज्ञीय गैस इस दोष से पूरी तरह मुक्त है। दूसरा, हवन के धुएं में एक अन्य विशेषता यह है कि वह वातावरण को शुद्ध करने की अद्भुत क्षमता रखता है—ऐसा हरिद्वार स्थित ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान द्वारा रिफ्रेक्टोमीटर से किए गए परीक्षणों से पता चला है। यज्ञ (हवन) के धुएं की जिस **तीसरी विशेष** बात की ब्रह्मवर्चस के प्रयोगों से जानकारी मिलती है, वह यह कि इस धुएं से निर्मित बादल जब वरसते हैं, वे अनाज एवं औषधियों को परिपुष्ट और निर्मल बनाते हैं। उनके सेवन से मनुष्य के शरीर की रोग-निरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

(११) अम्लीय वर्षा (Acid rain) से बचने का उपाय है 'हवन'—यूरोपीय देशों में होने वाली अम्लीय वर्षा उन देशों के लिए बड़े चिंता का विषय है। यज्ञ (हवन) द्वारा उनसे बचाव संभव है। इस बारे में अमेरिका से प्रकाशित पत्रिका 'National Horticulture Society' के सम्पादक डॉ. एन. मेक्केलिप्स ने स्पष्ट

लिखा है कि एसिड रेन से बचने का एक मात्र उपाय अग्निहोत्र (हवन) ही है।

(१२) **अन्तरिक्ष में वाष्पकणों के रूप में उपस्थित पृथ्वी की गंदगी का हवन द्वारा विनाश**– पृथ्वी की गंदगी वाष्प बनकर उड़ जाती है और अन्तरिक्ष में इकट्ठी होती रहती है। इसे 'मलार्क' कहते हैं। अन्तरिक्ष में उपस्थित इस मल (गंदगी) के परमाणुओं का विनाश हवन द्वारा इस प्रकार होता है–जब हवन (यज्ञ, अग्निहोत्र) में पौष्टिक, सुगन्धित, रोगनाशक औषधियां तथा घृत आदि की आहुतियां दी जाती हैं, वे औषधियां आदि वाष्प बनकर अंतरिक्ष में पहुंचती हैं। तब इन वाष्प के परमाणुओं का संयोग वहां पर पहले से ही उपस्थित 'मलार्क' पृथ्वी की गंदगी के परमाणु जो वाष्प बनकर अंतरिक्ष में पहुंचे थे। जिससे मल का विनाश होता है। उसके पश्चात् जब वाष्प बादल बनकर बरसते हैं, तब बादलों के पानी में पौष्टिक, सुगन्धित, रोगनाशक तत्त्वों की प्रधानता होती है, जिससे अनाज भी पुष्टिकारक बन जाता है। यह है हवन के माध्यम से प्राप्त होने वाला आश्चर्यजनक लाभ।

(१३) **हवन द्वारा मृत जंगल पुनः जीवित हो उठे**–पश्चिमी जर्मनी में 'जंगल की मौत' नामक एक बीमारी के कारण जंगल के जंगल सूख कर नष्ट होने लगे। वहां जंगलों के क्षेत्रों में वर्ष १९४८ में तीन माह तक लगातार अग्निहोत्र (हवन) कराने का यह चमत्कारिक प्रभाव हुआ कि उसी वर्ष में ही पतझड़ के मौसम के बाद हरियाली आनी प्रारम्भ हो गई और कुछ वर्षों में जंगलों के सभी पेड़ पुनः हरे भरे हो गए। यह सब नियमित अग्निहोत्र किए जाने से, उससे उठने वाले औषधीय धुएं के प्रभाव से ही संभव हुआ। इस प्रयोग से वहां के वैज्ञानिक भी बहुत प्रभावित हुए। (सर्वहितकारी दिनांक २८.१२.१९८६)

(१४) **एक अमरीकी अनुसन्धान कर्त्ता द्वारा कृषि के लिए हवन की अत्यधिक उपयोगिता का प्रबल समर्थन**–अमरीकी

अनुसन्धान कर्त्ता माइक बिलियन ने हवन-यज्ञ को कृषि-रक्षा का एक अत्यन्त कारगर और अति प्राचीन तरीका बताया है। श्री बिलियन की शोधपूर्ण खोज के निम्न विंदु बड़े महत्त्वपूर्ण एवं ग्रहणीय हैं–

(i) **हवन की अग्नि द्वारा पौधों पर आश्चर्यजनक प्रभाव**– श्री बिलियन का मानना है कि हवन की अग्नि से वातावरण में कृषि के लिए लाभकारी परिवर्तन हो जाता है। हवन पौधों को शक्तिशाली और स्वस्थ बनाकर पौष्टिक तत्त्वों को इनकी जड़ों तक पहुंचाने में सहायक होता है। अतः जहां नियमित रूप से हवन होता है, वहां पौधे बहुत जल्दी फलते-फूलते हैं ओर उनके फल-फूल और पत्तों के स्वाद, रंग और पौष्टिकता में जबर्दस्त सुधार हो जाता है।

(ii) **'हवन' द्वारा ज़मीन में नमी का अधिक देर के लिए स्थापन**– श्री बिलियम ने पाया कि पौधों के लिए नितान्त आवश्यक नमी किसी और ज़मीन में उतनी देर नहीं बनी रहती, जितनी देर उस जमीन में जिस पर यज्ञ के वातावरण का असर पड़ा हो। इस भूमि में यह असर यज्ञ में घी के इस्तेमाल किये जाने के कारण ही उत्पन्न हो जाता है।

(iii) **हवन द्वारा भूमि की उपज में वृद्धि तथा प्रदूषण की रोक-थाम**–अग्निहोत्र द्वारा हम न केवल भूमि का उपजाऊपन बढ़ा कर इसकी उपज ही बढ़ा सकते हैं, बल्कि वायु प्रदूषण की, जो आज संसार की एक विकट और गम्भीर समस्या और चिंता का विषय बन गया है, रोक-थाम कर सकते हैं। (आर्य जगत् साप्ताहिक, १६ अगस्त, १६८४ में प्रकाशित श्री बिलियन के लेख के हिन्दी अनुवाद पर आधारित।

14. हवन (अग्निहोत्र यज्ञ) द्वारा वृष्टि

'यज्ञशक्ति' नामक पुस्तक के लेखक के अनुसार, यज्ञ के अन्दर घृत (घी) की जो आहुतियां दी जाती हैं, उनके निम्न दो

भाग हो जाते हैं–

(क) **पहला भाग** अग्नि में जलकर अग्नि को प्रदीप्त करता है।

(ख) **दूसरा भाग** जलता नहीं। वह घृत और सामग्री की वाष्प के साथ मिल जाता है। ज्यों-ज्यों यह वाष्प आकाश में ऊपर उठता है, घी का वह बिना जला भाग भी उस वाष्प के साथ आकाश में पहुंच जाता है।

इस प्रकार हवन से अन्तरिक्ष में निम्न प्रकार के तीन तत्त्व पहुंचते हैं–

(i) घी का वह भाग जो जला। वह गैस के रूप में अन्तरिक्ष में पहुंचा।

(ii) घी का दूसरा भाग जो विन जले ही घृत व सामग्री से बने वाष्प के साथ ऊपर पहुंचा।

(iii) घृत और सामग्री के जलने से बनी वाष्प और अन्य धुएं के कण।

आसमान में हर समय भाप के रूप में पानी रहता है। यज्ञ द्वारा आसमान में चढ़ने वाले घी के परमाणु, घी होने के कारण वहां की ठंड से जमने लगते हैं। घी के परमाणुओं के जमने के कारण, उनके सम्पर्क में आने वाले बादलों के वाष्प के कण भी घी के ठंडे परमाणुओं की वजह से भाप की जगह पानी बन जाते हैं, और बरस पड़ते हैं। इस प्रकार हवन वर्षा लाने में सहायक है। जब भी वर्षा का अभाव होने के कारण या अनावृष्टि होने से हाहाकार मचता है, तव वृष्टि-यज्ञों का आयोजन किया जाता है, जिनमें विशेष प्रकार की सामग्री आदि का प्रयोग होता है। उन वृष्टि-यज्ञों से वर्षा होती है और सूखे की चपेट में आए खेत-खलिहान, पुनः हरे भरे हो जाते हैं। प्राचीन काल के ऐसे अनेक वृष्टि-यज्ञों का वर्णन इतिहास में मिलता है। वर्तमान काल में आयोजित ऐसे कुछ वृष्टि-यज्ञों से भी वर्षा का अभाव मिटाने के अनेक उदाहरण मिलते हैं। इनमें से कुछ का व्योरा नीचे की

तालिका में दर्शाया जा रहा है, ताकि पाठकगण वर्षा-प्राप्ति में हवन-यज्ञ की महत्त्वपूर्ण भूमिका से परिचित हों और हवन-यज्ञ के प्रति अधिक आस्थावान एवं विश्वासपूर्ण बनें।

वर्तमानकाल में आयोजित वृष्टि यज्ञों का विवरण

स्थान Place	हवन की अवधि Period	परिणाम Result
१. दिल्ली-नांगलोई	४ से १५ जून, १९९१	८ जून से दिल्ली, नांगलोई तथा वहां के पूर्व एवं दक्षिण के क्षेत्रों में **सुदूर स्थानों तक वर्षा हुई**
२. अजमेर	२६ से ३१ जुलाई, १९९५	यज्ञ के दिनों में **४.५ इंच वर्षा** हुई। इससे पूर्व इस मास में वर्षा नहीं हुई थी।
३. दिल्ली	१० से २० अगस्त, १९९५	१० अगस्त को कुछ समय के लिए अच्छी वर्षा हुई और पुनः २० अगस्त से **३-४ दिन तक खूब वर्षा हुई।**[1]
४. पानीपत	२१ से २६ अगस्त, १९९५	२२ को यज्ञ आरम्भ होने के एक घंटा पश्चात् आकाश में

1. मध्य के दिनों में (11 अगस्त से 19 अगस्त) वर्षा न होने का कारण यह था कि इस अवधि में यज्ञवेदी ऊपर से पूरी तरह से ढकी हुई थी। इस कारण यज्ञ का धुआं सीधा अंतरक्ष में वेगपूर्वक प्रवेश नहीं कर सका। उसका वेग छत से टकराकर मन्द गति एवं मंद वेग का होकर इधर-उधर निकल गया। पूर्णाहुति के दिन दिनांक 20 को ऊपर का आवरण (ऊपर की छत) खोल दिया गया। इससे धुएं की गति वेग से अंतरिक्ष की ओर हो गई। चारों ओर से लगभग 30 फीट ऊंचा कूपाकार (कुएं की तरह) आवरण होने से हवन का धुंआ ऊपर को वेग से गया, जिससे उसी दिन से अच्छी वर्षा आरम्भ हो गई और 3-4 दिन बिना रुके होती रही।

		मेघ उत्पन्न होने लगे और ६.२५ इंच वर्षा हो गई।[1]
५. जयपुर	८ से १२ फरवरी, १९६६	१० फरवरी से वर्षा आरम्भ हुई और १२ फरवरी की सायंकाल को ज़ोरदार वर्षा प्रारम्भ हो गई कांग्रेस का अधिवेशन ही स्थगित करना पड़ा।[2]
६. राजकोट	५ से १२ जून, १९६६	गायत्री महायज्ञ किया गया। ८ जून से वर्षा प्रारम्भ हो गई।
७. खण्डवा	११ से १८ जुलाई १९६६	११ को सायंकाल यज्ञ समाप्त होते ही ज़ोर से वर्षा प्रारम्भ हो गई। ४.५ इंच वर्षा हुई।[3]
८. बिलासपुर	३ से ११ अक्टू. १९६६	१२ अक्टूबर को बिलासपुर के लगभग ४०,००० वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में अच्छी वर्षा पड़ी।[4]

1. अतिवर्षा से हानि न हो, इसलिए 24 अगस्त की सायंकाल को वर्षा बंद कराने का प्रयोग इसी घोषणापूर्वक किया गया, जिससे उसी समय बादल भी आश्चर्यजनक रूप से हट गए। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि जब वृष्टियज्ञ आरम्भ किया गया था, तब तक सम्पूर्ण ऋतु में वर्षा नहीं हुई थी।

2. इस यज्ञ में जयपुर के श्री एल.आर. चुग, रिटायर्ड इंजीनियर जो अत्यन्त बीमार थे और यज्ञ में उपस्थित होने में भी नितान्त असमर्थ थे, उनको विशेष आग्रह से 2 दिन यजमान बनाया गया। वे उन्हीं दो दिन में आश्चर्यजनक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो गए।

3. 1966 का वर्ष देश में भयंकर अवर्षण (वर्षा न होना) का वर्ष था। सूखे की स्थिति उत्पन्न हो रही थी। खण्डवा के तालाब पूर्ण रूप से सूख गए थे। पूरा वर्ष यहां वर्षा बिल्कुल नहीं हुई थी। इस यज्ञ में भी यजमानों को अपने रोगों में विशेष आरोग्यता अनुभव हुई थी।

1966 में वर्षा न होने के कारण सितम्बर मास में छत्तीसगढ़ क्षेत्र की धान की फसल नष्ट होने को थी। मध्यप्रदेश से मानसून के समाप्त होने की सूचना आकाशवाणी से हो चुकी थी।

६. दिल्ली	७ से १२ फरवरी १६६७	८ फरवरी को दिल्ली के ऊपर का सम्पूर्ण आकाश बादलों से ढक गया और शीघ्र वर्षा की आशा हो गई। परन्तु काश्मीर घाटी में वर्षा प्रारम्भ हो जाने से वायु का प्रवाह उत्तर और पश्चिम की ओर अधिक वेग से हो गया, जिससे यहां के बादलों का जमाव घट गया। बाद में स्थिति में सुधार हुआ और १६ फरवरी को अच्छी वर्षा हुई। दिनांक १६, २० और २२ के दैनिक पत्रों में वर्षा होने के समाचार प्रसन्नता से छपे।
१०. अजमेर	२४ से ३० जुलाई, १६६७	यज्ञ के मध्य में ही २ दिन ऐसी वर्षा हुई कि वेदी एवं यज्ञकर्ता अच्छी तरह भीग गए। ३० को हल्की फुहारें हुईं। आसपास के क्षेत्र में वर्षा अच्छी हुई और अजमेर में भी ३ दिन बाद अच्छी वर्षा हो गई।
११. शाहपुरा राजस्थान	४ से १० अगस्त १६६७	५ अगस्त को ही वर्षा प्रारम्भ हो गई और १० अगस्त तक के मध्य कई बार वर्षा हुई। बाद को भी समय-समय पर वर्षा होती रही।
१२. ग्राम वर्धा	१ से ७	३, ४ व ५ जून को कुछ बूंदें इस

(विदिशा, मध्यप्रदेश)	जून १९६८	ग्राम में पड़ीं और समीप के ग्रामों में कुछ अधिक वर्षा हुई।
१३. ललरिया मध्यप्रदेश	१२ से १४ जून १९६८	१३ जून को सायं इतनी अधिक वर्षा हुई कि यज्ञशाला में पानी भर गया। अग्नि भी बुझ गई। (यज्ञ प्रारम्भ करने से पूर्व बादल नहीं थे और दिनांक १२ जून को भी आसमान साफ़ ही था।)
१४. शाहपुरा (भीलवाड़ा, राजस्थान)	२८ जून से १० जुलाई १९६८	४, ५, ६, ८, एवं ९ जुलाई को शाहपुरा में वर्षा हुई और दिनांक ७ को शाहपुरा से ७-८ मील की दूरी पर वर्षा हुई।
१५. शाहपुरा भीलवाड़ा राजस्थान	३ से १७ सित. १९६८	उदयपुर, भीलवाड़ा एवं चित्तौड़ में वर्षा हुई। दिनांक १४ को कुछ बूंदे शाहपुरा में पड़ीं। शाहपुरा से ५०-६० मील से आगे के क्षेत्र में इतनी अधिक वर्षा हुई कि नदी, ताल, नाले, गढ़े, खेत सब पानी से भर गये।
१६. ग्राम खरोरा जि. रामपुर	२४ से ३० सित. १९६८	२५ सितम्वर को ६.५ घंटे तक खूव ज़ोर से वर्षा हुई। २६, २७, २८ व ३० सितम्बर को ज़ोरों से वर्षा हुई। बाद को २-४ दिन तक भी खरोरा व समीप के क्षेत्रों में वर्षा होती रही।
१७. ग्राम आटौन,	४ से ६ अक्टू. १९६८	६ अक्टूबर को कुछ बूंदें पड़ीं। पुनः ७ व ८ को वर्षा हुई।

जि. कोटा		यज्ञ के दिनों में भी ४-५ मील दूर के क्षेत्रों में भी वर्षा हुई।
१८. शाहपुरा, भीलवाड़ा, राजस्थान	२१ से २७ जून १६७०	२० जून को दिन भर बादल नहीं थे। २१ से ही बादलों का निर्माण उत्तरोत्तर अधिक होता गया। २५ जून को रात्रि को १५ मिनट इतनी अधिक वर्षा हुई कि पतनाले चलने लगे। दिनांक २७ को रात्रि में अच्छी वर्षा हुई और २८ को भी खूब ज़ोरदार वर्षा हुई।

(श्री पं. वीरसेन जी वेदश्रमी के लेख वृष्टि यज्ञ के कतिपय परीक्षणों का संक्षिप्त विवरण', पर आधारित, जो 'वेद प्रकाश' पत्रिका के अप्रैल 1971 के अंक में छपा था।)

15. महर्षि दयानन्द और यज्ञ

महर्षि दयानन्द यज्ञ-हवन को सम्पूर्ण जगत् के लिए सुखकारक, अत्यन्त परोपकारक, सर्व रोगनिवारक, वायु और वृष्टिजल का शुद्धिकारक एवं मनुष्य समाज के लिए परम आवश्यक बताते हैं। इस संदर्भ में महर्षि की निम्न बातें विशेष ध्यान देने योग्य हैं–

१. **होम में चार प्रकार के द्रव्यः** होम में निम्न चार प्रकार के द्रव्य होने चाहिए–

(i) सुगन्ध गुणयुक्त (ii) मिष्ट गुणयुक्त (iii) पुष्टिकारक गुणयुक्त, (iv) रोगनाशक गुणयुक्त

इन चारों के द्वारा किया गया 'होम' वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करता है। इससे कर्ता का तथा सब जगत् का सुख एवं अत्यन्त उपकार होता है।

२. **यज्ञ के भाप से वृष्टि जल की शुद्धि**–यज्ञ से जो भाप उठता है, वह वायु और वृष्टि जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुखी करता है। इस प्रकार यज्ञ द्वारा परोपकार हो जाता है।

३. **यज्ञ कर्ता को सुख व आनन्द की प्राप्ति**–यज्ञ कर्त्ता को आनन्द प्राप्त होता है, क्योंकि वह यज्ञ द्वारा परोपकार करता है और जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा, उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से उसे सुख प्राप्त होगा।

४. **यज्ञ न करने वाला दोषी**–वायु और वृष्टि जल को बिगाड़ने वाला सब दुर्गन्ध मनुष्य के ही कारण से (निमित्त से) उत्पन्न होता है। इसलिए उस दुर्गन्ध का निवारण (दूर करना) भी मनुष्य का कर्त्तव्य है। यदि मनुष्य उस दुर्गन्ध को यज्ञ की सुगन्ध फैलाकर दूर नहीं करता, तो वह दोषी है।

५. **देहधारी प्राणियों** में सर्वोत्तम होने के कारण, मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह सब के उपकार के लिए यज्ञ करे।

६. **यज्ञ में मंत्र-पाठ के लाभ**–यज्ञ में वेद मंत्रों के पढ़ने से–(i) वेदों की रक्षा होती है। (ii) ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है। (iii) होम से मिलने वाले फलों का भी स्मरण होता है। (iv) वेद मंत्रों का वारंवार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं। (v) आस्तिक भाव पनपता है, चूंकि यज्ञकर्म ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक ही होता है।

७. **'यज्ञ' में ज्ञान-कर्म-उपासना, तीनों का समन्वय है।**

८. **यज्ञ का व्यापक प्रचार आवश्यक**–महर्षि के शब्दों में "आर्यवरशिरोमणि महाशय, ऋषि-महर्षि, राजे-महाराजे लोग वहुत सा होम करते और कराते थे। **जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था।**"

९. **महर्षि दयानन्द ने स्वयं यज्ञ कराए**– महर्षि ने कई अवसरों पर स्वयं भी यज्ञ कराए। इनमें से एक महायज्ञ उन्होंने कर्णवास

में कराया। वहां दस दिन तक गायत्री का जप होता रहा और फिर कई व्यक्तियों को यज्ञोपवीत दिए गए।

१०. **वृष्टि यज्ञ**—महर्षि दयानन्द वृष्टि यज्ञ के लिए भी अन्यों को प्रेरणा दिया करते थे। एक बार स्वयं भी उन्होंने वृष्टि यज्ञ कराया था।

११. **सर सय्यद अहमद खां से हवन-लाभ पर चर्चा**—मुसलमानों के तत्कालीन प्रमुख नेता सर सय्यद अहमद खां महर्षि दयानन्द के विशेष भक्त थे। जब स्वामी जी अलीगढ़ आए तो सय्यद साहब उनके दर्शन केलिए आए। उनके साथ कई प्रतिष्ठित मुसलमान और अंग्रेज़ सज्जन भी थे। वार्तालाप में सय्यद महोदय ने कहा—

"आपकी अन्य बातें तो युक्ति युक्त प्रतीत होती हैं, पर यह बात कि थोड़े से हवन से वायु का सुधार हो जाता है, हमें युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होती।"

स्वामी जी ने हवन के अनेक लाभ वताने के बाद सय्यद महोदय से पूछा— "आपके यहां कितने मनुष्यों का भोजन बनता होगा?"

उन्होंने उत्तर दिया—लगभग ५०-६० व्यक्तियों का।

स्वामी जी— "आपके यहां कितने सेर दल प्रतिदिन पकती होगी?"

सर सय्यद—कोई छः सात सेर।

स्वामी जी— इतनी दाल में कितनी हींग का छोंका दिया जाता है?

सर सय्यद— माशा भर से कम तो नहीं होता होगा।

स्वामी जी— क्या इतनी थोड़ी हींग सारी दाल को सुगन्धित बना देती है?

सर सय्यद— हां, अवश्य बना देती है।

तब स्वामी जी ने कहा— इतनी थोड़ी हींग की तरह थोड़ा-सा किया हुआ अग्नि-होम भी वायु को सुगन्धित कर देता है।

स्वामी जी के इस उत्तर से सर सय्यद बहुत सन्तुष्ट हुए।

16. हवन यज्ञ से शिक्षाएं, यज्ञ का आध्यात्मिक सन्देश

१. यज्ञाग्नि द्वारा आत्मोन्नति की प्रेरणा–यज्ञ की ऊर्ध्वगामी (ऊपर उठती हुई) ज्वालाएं हमें अपनी आत्मा को उच्च्व पथ पर चलने की प्रेरण देती हैं। यज्ञ-कर्त्ता को हवन करते हुए, यह अनुभव करना चाहिए कि मेरी विचारधाराएं भी ऊर्ध्वगामिनी हैं,मेरे पापमय (नीच, अपवित्र) संकल्प पवित्र, उत्तप्त और प्रदीप्त अग्नि ज्वालाओं में भस्म हो रहे हैं, समाप्त हो रहे हैं।

२. यज्ञकुण्ड द्वारा निरन्तर ऊंचा उठने की शिक्षा–यज्ञ कुण्ड नीचे से छोटा होता है, परन्तु विस्तृत होता हुआ ऊपर पहुंचकर बड़े आकार का हो जाता है। अर्थात् यदि नीचे होता है एक हाथ, तो ऊपर हो जाता है चार हाथ। इसी प्रकार, मानव भी हवनकुण्ड की तरह धीरे-धीरे निम्न से उच्च्व बने, क्षुद्र से महान्, अल्प से विशाल, तथा निराश से आशावान् और उत्साहपूर्ण बने।

३. समिधा से तप-त्याग और धर्म पर अडिग रहने की शिक्षा–समिधा-रूप में आने से पहले, समिधा वृक्ष की एक शाखा थी। वृक्ष की उस शाखा ने, सर्दी-गर्मी, धूप-वर्षा, तप्त हवाएं, शीत लहरें व हिमपात, पक्षियों की वीटों और उनकी चंचुओं के आघात-प्रत्याघात, कुल्हाड़ों की चोटें– यह सब कुछ सहन किया। इतनी दीर्घकालीन, धैर्यपूर्ण तपस्या के पश्चात् भी जब वह समिधा बनी, उसकी तपश्चर्या, आत्म-वलिदान का सिलसिला जारी रहा। अव वह यज्ञाग्नि में बैठी और उसने स्वयं को पूर्ण रूप से जलाकर, भस्म करके, समूचे वायुमण्डल को परिशुद्ध और सुगन्धित बनाया।

इस प्रकार एक समिधा ने अपने अनुपम त्याग, तप और बलिदान द्वारा मानव को शिक्षा दी कि ऐ मानव! तू भी निराश-हताश मत हो, अपने को दीन-हीन, निर्बल-अशक्त मत समझ। तू भी मेरी तरह तप, साधना, संयम द्वारा ऊंचा उठ और जीवन में स्वयं को महान् वना के दिखा।

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के अनुसार, समिधा हमें

एक अन्य शिक्षा भी देती है वह कहती है कि जिस प्रकार मैं एक वार वृक्ष से कट कर फिर दोवारा वृक्ष से जुड़ नहीं सकती, इसी प्रकार यज्ञासन पर बैठा यजमान भी यह निश्चय करे कि मैंने जो एक बार यज्ञमय जीवन का अवलम्वन कर लिया है, अब इसका कभी भी त्याग नहीं करूंगा–

न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

धीर पुरुष न्याय-संगत व धर्म-निष्ठ मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।

इस प्रकार, जब एक व्यक्ति कुछ दिव्य संकल्प धारण करके (जैसे किसी दुव्यर्सन-बीड़ी, सिगरेट, शराव, मांस आदि या किसी वुरी आदत-क्रोध, पापकर्म का त्याग) यज्ञासन पर वैठ जाता है, वह दृढ़ निश्चय कर ले कि वह भी जीवन यज्ञ में एक महान् आदर्श, एक ऊंचे लक्ष्य को जव तक प्राप्त न कर ले, वह अपने लक्ष्य पर, व्रत और संकल्प पर समिधा की तरह अडिग, अविचल और अटल रहेगा।

४. सामग्री द्वारा संगठन-सहयोग की शिक्षा–हवन की सामग्री में चार प्रकार के पदार्थ होते हैं–सुगन्धित, पुष्टिकारक, मिष्ट (मीठे) और रोगनाशक। इन चार प्रकार के पदार्थों का सम्मिलन, सम्मिश्रण और सहयोग एक ऐसा शक्ति-सम्पन्न यज्ञ-पदार्थ तैयार कर देता है, जो वातावरण को विशुद्ध और यजमान को वलिष्ठ, पुष्ट और निरोग वनाता है। इस प्रकार हवन-सामग्री हमें व्यक्तिगत-पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में सहयोग और संगठन के महत्त्व की शिक्षा दे रही है।

५. यज्ञ के 'घृत' द्वारा यजमान को गोपालक, गो-रक्षक एवं गोसदृश परोपकारी वनने की शिक्षा–यज्ञ के लिए गोघृत का ही विधान है। गोघृत प्राप्ति के लिए गोपालन आवश्यक है। इसलिए घृत से हम गोपालन व गोरक्षक वनने की प्रेरणा लें। गोदुग्ध अमृत है, गोघृत रसायन और गोमूत्र महौषध है। इसलिए, जिस प्रकार गोमाता मानव-मात्र को अमृत पिलाती है, हम भी जीवन में दूसरों का भला-परोपकार करें, अन्यों के लिए अमृत तुल्य,

हितकारी बनें– किसी का अहित, बुरा न सोचें, न करें। घृत की तरह जीवन में चिकनापन, स्नेहन, कोमलता लाएं, संवेदनशील और दयालु बनें।

६. यज्ञ में प्रयुक्त जल द्वारा शीतलता, सौम्यता की शिक्षा–यज्ञ का प्रारम्भ जल द्वारा आचमन करके होता है। जल से अंग-स्पर्श और यज्ञवेदी के चारों ओर छिड़काव किया जाता है। जल से भरा कुम्भ भी वेदी के उत्तर में रखा जाता है। चूंकि जल प्रवाहशील, शांतिदायक, शीतल, स्वास्थ्यप्रद और रोगनिवारक होता है, इसलिए हम भी जल की तरह शान्त, सौम्य, शीतल और गतिशील बनें। ईर्ष्या, द्वेष, वैर-विरोध, क्रोध, और कड़वे शब्दों से न स्वयं को दग्ध करें, न दूसरों के हृदयों को ठेस पहुंचाएं। अपने व्यवहार को सरस, प्रेममय, सौहार्दपूर्ण बनाने का प्रयत्न करें। हमारा जीवन परोपकारी और सर्वहितकारी हो।

७. यज्ञ की अग्नि द्वारा छः शिक्षाएं–यज्ञ की अग्नि हमें निम्न छः गुणों को धारण करने की शिक्षा देती है–

(i) **अग्नि की गति सदा ऊपर की ओर** होती है, नीचे की ओर कभी नहीं। इसलिए हम सदा ऊपर उठें, प्रगति-उन्नति करें। नीचे मत गिरें। व्यक्ति नीचे तब गिरता है, तब पतित होता है-जब उसके विचार-हीन, निकृष्ट, दुर्बल हो जाते हैं, जब उसका चिंतन नकारात्मक होता है। इसी प्रकार कुसंगति दुर्व्यसन, आलस्य, प्रमाद, अधर्म, पाप भी उसके पतन के करण बनते हैं। इसलिए अग्नि की तरह, संघर्षों, विघ्न-बाधाओं, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हम धैर्यवान बने रहें, घबराएं नहीं, सुपथ पर निर्बाध गति से चलते रहें, आगे बढ़ते-ऊंचे उठते रहें।

(ii) **अग्नि का प्रकाश (light) से अविच्छेद सम्बंध** है। हम भी हर समय सत्य, प्रेम, संयम, सेवा, तप, त्याग, ज्ञान और भक्ति के प्रकाश से अपने अन्तःकरण व आत्मा को प्रकाशित, आलोकित करते रहें। अज्ञान के अन्धकार में फंसकर अपने लक्ष्य से कभी न भटकें।

(iii) **अग्नि का तीसरा गुण है**–ताप, उष्णता (heat)। हम

भी उष्णता–तेजस्विता से सदा ओत-प्रोत रहें। तेजस्विता आती है– संयमित, नियमित जीवन से, सदाचार, सकारात्मक चिंतन और प्रभु भजन से। इसलिए इन गुणों को धारण करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहें। हम भी यज्ञाग्नि की तरह जलाने का काम करें। हम जलाएं– राग, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार, आलस्य, प्रमाद, स्वार्थ, मोह आदि से सम्बन्धित अपनी कुवासनाओं को, जो हमें कुमार्ग पर ले जाती हैं।

(iv) **अग्नि का चौथा गुण** है–गतिशीलता, प्रसार और विस्तारशीलता। इसलिए, हम सदैव गतिशील, उद्यमी-परिश्रमी और तपस्वी बनें तथा सद्‌गुणों का विस्तार, सद्‌विचारों का प्रचार-प्रसार करने वाले बनें। हम कभी भी रुकें नहीं, चलते रहें, बढ़ते रहें– 'चरैवेति-चरैवेति'।

(v) **अग्नि का पांचवा गुण** है–जलनशीलता। अग्नि में जो कुछ डालो, सब भस्म कर डालती है। रोग-कीटाणुओं को भी नष्ट कर देती है। हमारे भीतर भी जो कोई असुर भाव, निकृष्ट विचार आने लगे, वह भस्म हो जाए। हम निष्पाप, पावन, निर्मल और निष्कपट बने रहें।

(vi) **अग्नि का छटा गुण** है–क्षुद्र व अल्प को विशाल और व्यापक बना देना। उदाहरण के लिए एक लाल मिर्च जब अग्नि में डाली जाती है, तो दूर-दूर तक बैठे व्यक्तियों को प्रभावित करती है, उन्हें छींके आनी शुरु हो जाती हैं। इसी प्रकार, हम भी अपने गुणों से व्यापक बनें, दूर-दूर तक हमारे गुणों की सुगन्ध फैले। हमारे सम्पर्क में जो भी कोई आए, हम अपने श्रेष्ठ व्यक्तित्व, उत्तम आत्मबल से उसे भी श्रेष्ठ और उत्तम बना सकें।

८. मंत्रों के आरम्भ में ओ३म् के उच्चारण द्वारा शिक्षा–यज्ञ में मंत्रोच्चारण के पूर्व 'ओ३म्' शब्द का उच्चारण हमें यह बोध कराता है कि समस्त प्राकृतिक पदार्थों का आदि मूल परमेश्वर है। इसलिए, हमारे पास जो भी धन, बल, विद्या, सामर्थ्य आदि पदार्थ हैं, उन सब का उत्पादक, रक्षक-धारक, स्वामी परमेश्वर है, हम नहीं। इसलिए हम धन-सम्पत्ति, बल, विद्या आदि का

कदापि अभिमान न करें, प्रत्युत प्रत्येक अवस्था में उस वास्तविक दाता, स्वामी परमेश्वर का धन्यवाद करें।

९. **मंत्रों के अन्त में स्वाहा द्वारा शिक्षा**–मंत्र के अन्त में प्रयुक्त होने वाला 'स्वाहा' (सु + आह) शब्द हमें यह प्रेरणा देता है कि–

(i) हम सदैव 'सु'–अच्छा, प्रिय सत्य ही बोलें।

(ii) जैसा ज्ञान आत्मा में हो, वैसा वाणी से प्रकट करें। ऐसा न हो कि अन्दर कुछ, बाहर कुछ। हम मन, वचन, कर्म से एक हों।

(iii) 'स्वाहा' शब्द त्याग और समर्पण भाव का भी द्योतक है। इसलिए, हम परोपकार के कार्यों में दान, सेवा, सहयोग करने से पीछे न रहें और अपना जीवन देश व धर्म के लिए समर्पित करने को भी सर्वदा उद्यत रहें।

१०. **'इदन्न मम' के उच्चारण से अहंकार-निवृत्ति की शिक्षा**–यज्ञ के बीच आहुतियों के अन्त में यजमान कहता है–

'इदमग्नये इदन्न मम' अर्थात् यह अग्नि के लिए है, यह मेरा नहीं।

–**'इदं वायवे इदन्न मम'** अर्थात् यह वायु के लिए है मेरा नहीं।

–**'इदं प्रजापतये इदन्न मम'** अर्थात् यह प्रजापति, प्रभु के लिए है, यह मेरा नहीं।

ऐसा बार-बार कहना, मन में इस भाव को सुदृढ़ करना है कि जो आहुति रूप में मैं दे रहा हूं, यह प्रभु का ही दिया हुआ है, वास्तविक दाता तो प्रभु है। उसकी वस्तु उसी को समर्पित है–

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर॥

ऐसा उच्चारण करने से यजमान का गर्व, अहंकार तिरोहित होता है, मिटता है। दूसरा, यह मेरा नहीं यह कहने से सांसारिक वस्तुओं के प्रति हमारा ममत्व, मोह, आसक्ति का भाव नष्ट होता है और प्रिय से प्रिय वस्तु को त्याग करने की भावना पक्की होती है।

११. **'सर्ववैपूर्णंस्वाहा' द्वारा वैराग्य भावना की शिक्षा**–यज्ञ के अन्त में 'सर्ववैपूर्वंस्वाहा' कहकर समस्त द्रव्य हवनकुंड में डाल देने से, यजमान को यह ज्ञान होता है कि एक दिन उसे इस

संसार से विदा होना है और उस समय वह पदार्थ जिनमें वह अव 'मेरा, मेरा' कहकर, आसक्त हो रहा है, सब यहीं रह जाने हैं। इसलिए हमें अभी से, निरासक्त बनने, वैराग्यभाव को सीखने, राग-मोह से छूटने का अभ्यास आरम्भ कर देना चहिए, ताकि अन्तकाल में हमें प्रिय वस्तुओं का वियोग रुलाए नहीं।

17. यज्ञ-विषयक अन्य जानकारियां एवं शंका समाधान

१. **यज्ञ शव्द का अर्थ**–'यज्ञ' शव्द 'यज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है–देव-पूजा, संगतिकरण और दान।

देवपूजा है– जड़ व चेतन देवताओं की पूजा, उनके प्रति सत्कार- आदर की भावना। जड़ देवता हैं–सूर्य, चन्द्रमा, जल, वायु, पृथ्वी, आदि जड़ पदार्थ। चेतन देवता हैं– माता, पिता, आचार्य-अतिथि। इनको देवता इसलिए कहते हैं कि चूंकि ये देते हैं (सूर्य-चन्द्र प्रकाश देते हैं, जल-वायु हमें जीवन देते हैं, पृथ्वी-वनस्पतियां, अन्न, फल-फूल, धातु आदि देती हैं। इसी प्रकार, माता-पिता, आचार्य- अतिथि भी पालन, विद्या-दान और सत्योपदेशादि करते हैं)।

संगतिकरण–यह 'यज्ञ' का दूसरा अंग है। इसके विना देव-पूजा (देवों की पूजा) संभव नहीं। उदाहरण केलिए– एक याजक **'क'** यज्ञ करने वाला हवन यज्ञ कर रहा है। वह 'हवि' (सामग्री, घी) के रूप में देव **'ख'** (वायु, सूर्य आदि) को आहुति द्वारा दे रहा है। **'क'** की इस क्रिया में एक देने वाला **'क'** है और दूसरा लेने वाला **'ख'** है। एक दे रहा है ओर दूसरा ले रहा है। तभी यज्ञ संपन्न हो रहा है। अब यदि इनमें से एक अनुपस्थित (absent) हो तो क्या 'यज्ञ' की क्रिया संपन्न हो सकेगी? उत्तर होगा–कदापि नहीं। इसलिए, यज्ञ क्रिया तभी पूरी हो सकती है जव 'क' और 'ख' दोनों उपस्थित हों। दोनों की उपस्थिति, दोनों का मेल ही संगतिकरण है।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है

कि यज्ञ का प्रथम अंग (देव-पूजा) दूसरे अंग (संगतिकरण) पर आश्रित है, और दूसरा अंग प्रथम अंग पर आश्रित है। दूसरे शब्दों में दोनों अन्यान्योआश्रित हैं, एक दूसरे से आवद्ध-बंधे हुए हैं।

यज्ञ का तीसरा अंग 'दान'—उपरोक्त वर्णन से यह वात भी समझी जा सकती है कि यज्ञ का प्रथम अंग (देव-पूजा) और दूसरा अंग (संगतिकरण)— दोनों अंग, तीसरे अंग (दान) पर आश्रित हैं। चूंकि यदि 'क', 'ख' को कुछ देना चाहता है, तो यह देने की क्रिया (दान) तभी सम्पन्न हो सकती है, जब 'क' और 'ख' दोनों मौजूद हों, दोनों का मेल हो, 'संगतिकरण' हो।

इस प्रकार, 'यज्ञ' के उपरोक्त तीनों अंग एक-दूसरे से आवद्ध (जुड़े हुए) हैं, तीनों तत्व परस्पर एक-दूसरे के पूरक हैं। दूसरे शब्दों में यज्ञ के 'देव-पूजा' और 'दान' तत्व व्यर्थ हो जाएं यदि 'संगतिकरण' न हो, विना संगतिकरण के दान-आदान, दान का लेना-देना असम्भव है।

२. यज्ञ में हिंसा का विधान नहीं—भारतवर्ष में एक समय ऐसा आया था जब यज्ञ का स्वरूप विकृत कर दिया गया, बिगाड़ दिया गया। यज्ञों की आड़ में पशु-हिंसा और नर-हिंसा तक का क्रूर, कुत्सित, वीभत्स, वेद-विरुद्ध दुष्प्रचार हुआ। वाममार्गियों के इस षड्यंत्र के कारण 'यज्ञशाला' को 'वधशाला' और कसाईखाना बना दिया गया। उस अंधकारकाल के पश्चात् भारतवर्ष की देवभूमि पर एक महापुरुष का अवतरण हुआ, जिसने यज्ञ का वास्तविक, वैज्ञानिक और वेदशास्त्रानुमोदित स्वरूप पुनः प्रस्तुत करके विश्व का भला किया। वे महापुरुष थे— महर्षि दयानन्द सरस्वती। उन्होंने वेदों के प्रमाण देकर सिद्ध किया कि वेदशास्त्रों में कहीं भी पशु-हिंसा का विधान नहीं। वेदों में स्पष्ट रूप से गोवध व अन्य जीवों के वध का निषेध है, जैसा कि निम्न मंत्रों से प्रमाणित होता है—

(i) मानव कल्याण के लिए 'गाय' को मत मारो—

इमं साहस्रं शतधारमुत्सं व्यच्यमानं सरिरस्य मध्ये।
घृतं दुहानामादतिं जनायाग्ने मा हिंसीः व्योमन्॥ *यजु. १३/४३*

मानव-जाति के कल्याण को लक्ष्य रखते हुए गौ को मत मारो, क्योंकि यह असीम सुविधाओं की जननी, दुग्ध की अजस्र धाराओं को देने वाली, विविध सौख्य साधनों की स्रोत हैं, अतः वध के अयोग्य है।

(ii) **दुग्ध एवं घृत जैसे मूल्यवान पदार्थों की उत्पत्ति-स्थान गौ को मत मारो–**

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यसानां अमृतस्य नाभिः।
प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट॥

ऋ. ८/१०१/१५

गौ रुद्र ब्रह्मचारियों की माता समान, वसु ब्रह्मचारियों के लिए पुत्री समान और आदित्यों के लिए भगिनी तुल्य है। दुग्ध एवं घृत जैसे मूल्यवान् पदार्थों का उत्पत्ति स्थान है। अतः मैं (परमात्मा) समस्त बुद्धिमान् सज्जनों को आदेश देता हूं कि अपराधरहित गौ को, जो मारने योग्य नहीं हैं, मत मारें।

(iii) **गोघातक का सिर काट दो–**

यः पौरुषेयेण क्रविषा समंक्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च॥

ऋ. १०/८७/१६

यदि एक यातुधान युक्ति से न माने और गोघात कर ही डाले, तो ऐसे घृणित दुष्कृत्य के लिए उसका सिर धड़ से अलग कर देना चाहिए।

(iv) **सभी को आत्माओं के रूप में देखो–**

यस्मिंत्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः॥ यजु. ४०/७

जो व्यक्ति सम्पूर्ण प्राणियों को केवल आत्माओं के रूप में ही देखता है, उसे उनको देखने पर मोह अथवा शोक (घृणा) नही होता, क्योंकि वह उन सब प्राणियों के साथ एकत्व (समानता तथा साम्यता) का अनुभव करता है। ऐसे व्यक्ति के लिए स्त्री, पुरुष, बच्चे-सभी आत्मा के रूप हैं। गाय, भेड़-बकरी, मुर्गा-मुर्गी आदि को वह पशु-पक्षी के रूप में न देखकर आत्माओं के रूप

में ही देखता है। इस प्रकार सभी को आत्माओं के रूप में देखने वाला ऐसा व्यक्ति, कैसे किसी प्राणी का वध कर सकता है? —उसको जिह्वा के क्षणिक स्वाद हेतु मार डालना तो दूर की बात है।

(v) **सभी के प्रति मित्र-दृष्टि रखो**—वैदिक संस्कृति का अनुयायी सभी प्राणियों को मित्र समझता है—**"मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे"** *(यजुर्वेद ३६/१८)*

इससे स्पष्ट है कि वेदों में पशु-पक्षियों के मांस खाने का विधान नहीं है।

(vi) **वेदों में पशु-वध निषेध—**

'माहिंसीस्तन्वा प्रजा' *(यजुर्वेद १२/३२)*

शरीर से पालने योग्य प्राणी को मत मार।

'इमं मा हिंसीर्द्विपादं पशुम्' *(यजु. १३/४७)*

दो पग वाले और पवित्रकारक फलप्रद जंगली गाय आदि पशु को मत मार।

(vii) **गोवध-निषेध—**

गां मा हिंसीः *(यजु. १३/४३)*

घृतं दुहानामदितिं......मा हिंसीः *(यजु. १३/४६)*

(viii) **घोड़े के वध का निषेध—**

अश्वं......मा हिंसीः *(यजु. १३/४२)*

(ix) **भेड़ों** (बकरियों समेत) **को मत मार—**

अविं मा हिंसीः *(यजुर्वेद १३/४४)*

(x) **ऋग्वेद में गोवध करने वाले को मृत्युदंड** का विधान है *(ऋ. ७/५६/१७)*

(xi) **अथर्ववेद में** गाय, घोड़े और पुरुष के हत्यारे को गोली से उड़ा देने का आदेश है। *(अथर्ववेद १/१६/४)*

(xii) **अथर्ववेद में** मांस, अंडा खाने वालों को विनष्ट करने का स्पष्ट आदेश है। *(अथर्व. ८/६/२४)*

उपरोक्त वेद-मंत्रों के आधार पर यह पूर्णतया सिद्ध हो जाता है कि वेद मांस खाने की कठोर मनाही करते हैं। ऐसी स्थिति

में वेदानुयायी प्राचीन आर्यों को मांसाहारी कहना क्या सर्वथा अनुचित एवं झूठ नहीं है?

(xiii) **नरमेध और पशु मेध यज्ञों का वास्तविक अर्थ–**

पशुमेध का अर्थ है–मनुष्य अपनी पाशविक वृत्तियों की आहुति दे, उनका पूरी तरह अंत कर दे।

नरमेध, का अभिप्राय है–मनुष्य अपना सर्वस्व, अपना समूचा जीवन, प्रभु चरणों में और प्रभु की बनाई समस्त प्रजा के कल्याण में अर्पित कर दे।

महाभारत, शांतिपर्व, ३३८ और २७२ के अनुसार,

यज्ञ में पशुहिंसा करना सर्वथा अवैदिक है और इससे यज्ञ का समस्त पुण्य नष्ट हो जाता है।

(xiv) **अश्वमेध** का अर्थ है–राजा द्वारा न्याय धर्म से प्रजा पालन, राष्ट्र का सुप्रबन्ध तथा अग्नि में घी आदि द्वारा यज्ञ करना (अश्व का अर्थ घोड़ा भी है, 'राष्ट्र' भी है)। इसका अर्थ घोड़े का वध नहीं।

उदाहरण–महाभारत शान्तिपर्व अध्याय ३३८ में स्पष्ट लिखा है–**"न तत्र पशुघातोऽभूत"** अर्थात् उस यज्ञ में किसी पशु का वध नहीं किया गया।

गोमेध का अर्थ है–अन्न, इन्द्रियों, पृथ्वी आदि को पवित्र रखना। इसका अर्थ 'गोवध' नहीं।

३. **'यज्ञ' के कुछ अन्य पर्यायवाची (Synonymous) शब्द–**

(i) सत्र–१२, दिन या इससे अधिक काल तक चलने वाले यज्ञ को 'सत्र' कहते हैं।

(ii) अध्वर–यज्ञ के लिए 'अध्वर' शब्द इसलिए प्रयुक्त होता है, चूंकि यज्ञ एक हिंसा-रहित कर्म है। (ध्वर = हिंसा, अध्वर = हिंसा रहित)।

(iii) होम = ऐसा कर्म जो अग्नि में आहुतियों द्वारा सम्पन्न होता है।

(iv) क्रतु = ज्ञानपूर्वक किया गया कर्म।

(v) मख = जिस कर्म में किसी प्रकार की हानि न हो।

४. 'यज्ञ' के लिए 'सेक्रिफाइस' (Sacrifice) शव्द का प्रयोग गलत– 'Sacrifice' शव्द से यदि हम 'त्याग' का ही ग्रहण करें, तो वह किसी अंश में ठीक है। परन्तु इसका प्रचलित अर्थ समझा जाता है– किसी पशु-पक्षी की वलि। ऐसा समझना 'यज्ञ' के अर्थ के सर्वथा विपरीत है।

५. पंच महायज्ञों का संक्षिप्त विवरण– (i) **ब्रह्मयज्ञः** वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय, प्रातः-सायं ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना (ii) **देवयज्ञ या अग्निहोत्र** (iii) **पितृयज्ञ**–जीवित माता-पिता, वृद्ध, ज्ञानी और परमयोगियों की श्रद्धा से सेवा करना (श्राद्ध) और उनको प्रसन्न करना, तृप्त करना (तर्पण) (iv) **बलिवैश्वदेवयज्ञ**– घृत तथा मीठे अन्न से आहुति देना तथा कुत्ते कौवे, चींटी आदि को तथा दुःखी व भूखे प्राणी को अन्न देना (v) **अतिथि यज्ञ**–धार्मिक, सत्योपदेशक, विद्वान्, परमयोगी सन्यासी की सेवाशुश्रूषा।

६. पंचमहायज्ञ–'महायज्ञ' क्यों?

ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ–इन पांच यज्ञों को महायज्ञ कहने का क्या अभिप्राय है?

इनको निम्न कारणों से महान् कहा गया है–

(i) अनिवार्यता–यह यज्ञ महीनों चलने वाले न होकर, कुछ मिनटों में सम्पन्न हो जाते हैं और आवश्यक हैं। इसलिए इनको अनिवार्य ठहराया गया है।

(ii) आजीवन करने योग्य होने से भी यह यज्ञ 'महान्' कहलाते हैं। इनकी एक दिन में ही इतिश्री नहीं हो जाती, अपितु प्रतिदिन करते हुए मृत्युपर्यन्त इनको करना होता है।

(iii) दैनिक आत्मनिरीक्षण–इन यज्ञों में दैनिक आत्मनिरीक्षण करना आवश्यक होता है। इसलिए भी यह 'महान्' कोटि में आते हैं।

(iv) नास्तिकता का उन्मूलन–इन यज्ञों के द्वारा व्यक्ति धीरे-धीरे प्राणिमात्र में आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करने लगता है। यह स्वी.कृति ही उसे आस्तिक बनाती है।

(v) **आत्मविकास**–पांचवां कारण है–इन यज्ञों का आत्म विकास में सहायक होना। इन यज्ञों द्वारा व्यक्ति को अणु-अणु में प्रभु की सत्ता का मान कराया जाता है।

(vi) **दान भाव छटा कारण है**–इन यज्ञों के द्वारा व्यक्ति में दानादि भावों को जागृत किया जाता है।

७. अग्निहोत्र से कार्वनडाइआक्साइड गैस (CO_2) की उत्पत्ति–शंका व समाधान

शंका-क्या अग्निहोत्र के दौरान लकड़ियां जलाने से हानिकारक CO_2 गैस उत्पन्न नहीं होती?

समाधान–(i) लाभदायक गैसें भीः जहां CO_2 पैदा होती है, वहां अन्य अनेक लाभदायक गैसें (जिनमें फोर्मैलडीहाइड Formaldehyde) गैस भी शामिल है, जो एक शक्तिशाली कीटाणुनाशक गैस है) भी पैदा होती है।

(ii) **रोग विनाशक औषधियों तथा घी के सूक्ष्मकण**– हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अग्निहोत्र में घी तथा अनेक औषधियां डाली जाती हैं। उस रोग-विनाशक औषधियों और घी से उत्पन्न सूक्ष्म कण भी वायु में प्रवाहित-मिश्रित हो जाते हैं। इस प्रकार, जितनी CO_2 पैदा होती है, उसके विनाशकारी अंश को, औषधियों के ये सूक्ष्म कण विनष्ट कर देते हैं। लाभकारी औषधियों की मात्रा को भी अधिक बढ़ाकर, इस समस्या से पूरी तरह निपटा जा सकता है।

(iii) CO_2 कोई भयानक विष नहीं–एक अन्य विचारणीय बात यह है कि यद्यपि CO_2 गैस से हमारी जीवनीय शक्ति को लाभ नहीं पहुंचता तो भी CO_2 कोई भयानक विष नहीं है। प्रतिदिन पिए जाने वाले सोडा, कोकाकोला, कोक, कोको, लिमका आदि पेय पदार्थों में भी तो CO_2 गैस होती है। गांवों में प्रायः रसोईघरों में चूल्हा जलाया जाता है क्या वहां जलाने से उत्पन्न CO_2 गैस से लोग मर जाते हैं?

(iv) CO_2 गैस हमारी सहायक भी–हवन से जो रोगनाशक गैसें उत्पन्न होती हैं, उन्हें उठाकर दूर-दूर तक तथा आकाश में

ऊंचा चढ़ा देने का काम CO_2 गैस ही करती है।

(v) वृक्षों लताओं पेड़-पौधों द्वारा CO_2 का भक्षण—प्रामाणिक रूप में बने यज्ञ कुण्ड में, निर्धारित वृक्षों की लकड़ियां जलायी जायें तथा उचित मात्रा में गोघृत तथा सामग्री डाली जाए तो बहुत ही कम कार्बन डाइआक्साइड उत्पन्न होती है। वह भी यज्ञशाला के परिसर में विद्यमान वृक्षों, लताओं, पौधों द्वारा खा ली जाती है।

(vi) **कल-कारखानों की हानिकारक गैसें**—यज्ञ से निकलने वाली थोड़ी सी कार्बन डाईआक्साइड इतनी हानिकारक व विषैली नहीं होती, जितनी कि आज के कल-कारखानों, मिलों, फैक्ट्रियों व वाहनों से निकली गैसें होती हैं। जब कल कारखानों से निकली भयंकर हानिकारक विषैली गैसों को थोड़े से लाभ के लिए हम सहन कर रहे हैं, तो बहुत अधिक लाभदायक यज्ञ में थोड़ी सी CO_2 की उत्पत्ति से हम इतने भयभीत क्यों होते हैं?

(vii) CO_2 सर्वत्र व्याप्त, इसके प्रभाव को कम करने का उपाय भी यज्ञ—CO_2 वायु में हर जगह घुला-मिला रहता है, कहीं अधिक मात्रा में और कहीं कम मात्रा में। पहाड़ों में आक्सीजन और ओज़ोन की मात्रा अधिक होती है, तो शहरों में CO_2 की मात्रा अधिक होती है। इसलिए, ऐसा नहीं है कि पहाड़ों में CO_2 नहीं होती, या शहरों में आक्सीजन नहीं होती। बात सिर्फ इतनी है कि CO_2 की मात्रा सीमा से अधिक नहीं होनी चाहिए, चूंकि CO_2 की सीमा से अधिक मात्रा ही स्वास्थ्य केलिए हानिकारक है।

अग्निहोत्र करते हुए जो थोड़ी CO_2 गैस निकलती है, उसका कुछ अंश लाभदायक शक्तिशाली कीटाणुनाशक फोर्मेल्डीहाइड (Formaldehyde) गैस में तबदील हो जाता है। ऐसा डॉ. सत्य प्रकाश डी.एस.सी. ने खोज के आधार पर अपनी पुस्तक 'Agnihotra' में लिया। वे लिखते हैं— 'To some extent, even carbon dioxide is also reduced to formaldeyde' इस प्रकार CO_2 का कुछ भाग फार्मेल्डीहाइड में बदल जाने के पश्चात् जो

शेष भाग बचता है, उसका कुछ अंश यज्ञ वेदी के चारों ओर छिड़के गए जल द्वारा शोषित (absorb) कर लिया जाता है और पुनः शेष बचा भाग कुछ आस-पास के पेड़-पौधों का आहार बन जाता है और कुछ हवन से उत्पन्न सुगन्धित, औषधिय वायु के द्वारा भी निरस्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त जैसा पहले ही ऊपर बताया जा चुका है, CO_2 प्रभाव को कम करने के लिए हवन में घी और अन्य रोगनाशक वायु शोधक औषधियां व सुगन्धित पदार्थ भी अधिक मात्रा में डाले जाते हैं, जैसे कस्तूरी, केसर, अगर, तगर, चन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री, तुलसी, कपूरकचरी, जटामांसी (बालछड़), गुग्गल, धूप, लौंग, नागरमोथा आदि सुगंधित पदार्थ।

इस प्रकार, हवन में पैदा होने वाले CO_2 की अपेक्षा उसके विनाशकारी अंश को नष्ट करके, औषधियों के स्वास्थ्यकारी अंश को प्रभूत मात्रा में बढ़ा दिया जाता है।

८. क्या पर्यावरण में फैला भयंकर प्रदूषण, थोड़े से घी व सामग्री द्वारा किए जाने वाले यज्ञ से दूर हो सकता है?

समाधान–(i) **इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर यज्ञों के आयोजन आवश्यक**–कल-कारखानों, वाहनों, मिलों आदि द्वारा उत्पन्न हज़ारों गुना प्रदूषित वायु को यज्ञ तभी दूर कर सकता है जब यज्ञों के राष्ट्रीय स्तर पर जगह-जगह विशाल आयोजन किए जाएं।

(ii) **वैयक्तिक-सामाजिक स्तर पर सभी का प्रयास आवश्यक**–

यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा उत्पन्न किए गए प्रदूषण को दूर करना अपना कर्त्तव्य समझें, और इसी प्रकार प्रत्येक मिल व कारखाने का मालिक भी प्रदूषण दूर करने के लिए अपना योगदान करे, तो प्रदूषण-नियन्त्रण की समस्या का हल संभव हो सकता है। इसके लिए, केवल पारिवारिक स्तर पर ही, विश्व के अरबों लोग न सही, केवल १०-२० करोड़ परिवार भी यदि नित्य यज्ञ करने लग जाएं तो प्रदूषण नियंत्रित की समस्या क्यों नहीं सुलझ सकती।

६. **वर्तमान महंगाई के युग में क्या घी आदि महंगे व उत्तम पदार्थों को अग्नि में जलाकर नष्ट करना बुद्धिमत्ता है?**

समाधानः (i) जलाने से पदार्थ नष्ट नहीं होता—यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि जलाने से कोई पदार्थ नष्ट नहीं होता, उसका केवल रूपान्तरण होता है– 'Matter is neither created nor destroyed. It only changes its form.'

(ii) खाने से लाभ एक को, यज्ञ द्वारा लाभ हज़ारों को—खाया हुआ ५० ग्राम या १०० ग्राम घी केवल खाने वाले एक मनुष्य को ही लाभ पहुंचाता है। परन्तु वही घी हवन की अग्नि में डालने —आहुत करने से यज्ञीय प्रक्रिया द्वारा सूक्ष्म होकर, कई गुणा शक्तिशाली बन जाता है और हज़ारों मनुष्यों, पशु-पक्षियों तथा वृक्षादि तक के लिए लाभदायक हो जाता है।

(iii) महंगाई का रोना-केवल यज्ञ के लिए क्यों?

इस महंगाई के समय में क्या हम मंहगी रोटी खाना बन्द कर देते हैं? क्या मंहगे कपड़े पहनना छोड़ देते हैं? क्या मंहगे टी.वी., स्कूटर-कार, नहीं खरीदते हैं? जब सारे काम जारी रखते हैं, तो फिर यज्ञ को ही मंहगाई की वात करके क्यों बंद करें, जवकि यज्ञ से वहुत अधिक लाभ होते हैं।

(iv) घी की कमी व महंगाई ऐसे दूर की जा सकती है—घी मंहगा क्यों है? क्या परमात्मा ने कोई ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि घी महंगा विके? सीधी सी बात है कि जिस चीज़ का उत्पादन कम होता है और मांग अधिक होती है, वह महंगी हो जाती है। अब से चालीस-पच्चास वर्ष पहले भी इस देश के गांवों में दूध और मट्ठा बेचे नहीं जाते थे। गरीव से गरीब आदमी भी इनका भरपूर सेवन करता था। फिर अब एक ऐसी दशा क्यों आ गई कि दूध-घी दुर्लभ हो गए हैं? इसका एक ही कारण है—वह यह कि जिस अनुपात में जनसंख्या बढ़ी है, उस अनुपात में दुधारू पशुओं की संख्या नहीं बढ़ी। क्यों? —इसलिए चूंकि हमने पशु-वंश की वृद्धि पर कोई ध्यान नहीं दिया। उनकी वृद्धि के स्थान पर, उनकी क्रूरतापूर्ण हत्या को तेज़ करने और उसके

लिए बूचड़खानों की संख्या को बढ़ाने पर ध्यान दिया गया। आज देश में ३६०० बूचड़खाने हैं, जिनमें १० बड़े यांत्रिक (मशीनीयुक्त) कत्लखाने हैं। इनमें **प्रतिदिन २ लाख ५० हजार पशु काटे जाते हैं। केवल वर्ष २०००-२००१ में, देश में मांस का कुल उत्पादन हुआ ७२,००,००० मिलियन टन, जिसके लिए ६ करोड़ साठ लाख भैंसों की बलि दी गई।**

—दैनिक जागरण दिनांक १३-८-२००२

यदि पशु-वंशकी वृद्धि पर ध्यान दिया होता तो आज यह दशा न होती। आप डेनमार्क का उदाहरण लीजिए। वहां सैकड़ों टन मक्खन समुद्र में फेंक दिया जाता है या किसी भूखे को दे दिया जाता है, क्योंकि वहां दूध डेनमार्क के लोगों की आवश्यकता से अधिक होता है। ऐसा ही हमारे देश में भी किया जा सकता है, परन्तु इसके लिए चाहिए हमारा दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति।

इस समय पूरी धरती पर ४४,७७,००० हेक्टयेर उपजाऊ भूमि पर तम्बाकू जैसी स्वास्थ्यनाशक वस्तु की खेती की जा रही है। यदि इस लाखों हेक्टेयर उपजाऊ भूमि पर तम्बाकू का उत्पादन बन्द करके, मानव हित में फलों व शाक-सब्जियों के पेड़-पौधों का या अन्न का उत्पादन किया जाए और साथ में अन्धाधुंध किया जाने वाला करोड़ों पशुओं का वार्षिक वध रोका जाए, तो उससे इतने पशुओं का पालन हो सकेगा कि खाने के लिए भी और हवन के लिए भी पर्याप्त दूध-घी प्राप्त हो जाएगा। इस प्रकार जब दूध-घी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होगा, तब कहां रहेगी महंगाई और क्यों न मिटेगी विनाशकारी प्रदूषण की समस्या?

१०. शंका—यदि वातावरण को सुगन्धित करना है, तो यह कार्य अगरबत्ती, धूप, इत्र, सेन्ट, फूलों आदि के द्वारा भी किया जा सकता है। फिर यज्ञ क्यों करें?

समाधान—यज्ञ का प्रयोजन केवल सुगन्धि फैलाना ही नहीं, बल्कि जल-वायु के प्रदूषण को भी नष्ट करना होता है। अगरबत्ती, धूप आदि द्रव्यों के जलाने से या घर में फूलों के लगाने से केवल सुगंधि ही उत्पन्न होती है, वह भी सीमित मात्रा में व सीमित

स्थान पर, जबकि यज्ञ की औषधीय सुगंधित वायु दूर-दूर के प्रदूषित जल और वायु की शुद्धि करती एवं उन्हें सुगंधित बनाती है।

दूसरा—धूप, अगरबत्ती या फूलों में यह सामर्थ्य नहीं होता कि वह घर के अन्दर की गंदी वायु को बाहर निकालें ओर शुद्ध वायु को भीतर प्रवेश कराएं। यह कार्य केवल यज्ञ ही पूरा कर सकता है। चूंकि यज्ञ के दौरान वायु हल्की होकर ऊपर उठती और बाहर निकलती है। उसके रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए वहां शुद्ध वायु आ जाती है।

११. हवन की समिधाएं एवं सामग्री कैसी हो?

घृत और सामग्री बहुत शुद्ध और ताज़ा काम में लेनी चाहिए। समिधायें पलाश, पीपल, बड़, बबूल, गूलर, नीम, अशोक, चन्दन, देवदार व बिल्व आदि वृक्षों की शुद्ध और बिना घुनी लकड़ी (जिसमें जीव न हों) काम में लेनी चाहिए।

हवन सामग्री के पदार्थ—कपूर, काचरी, नागरमोथा, बाल-छड़, छारछबीला, पनड़ी, चन्दन चूरा, राल, गूगल, तिल, जौ, बेल-गिरि केशर, इलायची और कपूर।

इन सब चीज़ों को साफ़ कर लीजिए, जिससे इनमें कोई जीव-जन्तु न रह जावे। सब पदार्थों को अलग-अलग महीन कूट लीजिए। हवन करते समय सामग्री में पर्याप्त मात्रा में घी मिला लेना चाहिए।

क्षय रोग और अन्य संक्रामक रोगों के लिए हवन सामग्री

मंडूकपर्णी, ब्राह्मी, इन्द्रायण की जड़, शतावरी, असगन्ध, शालपर्णी, अडूसा, गुलाब के फूल, रास्ना, वंशलोचन, देवदार, अगर, तगर, क्षार, काकोली, जटामांसी, गोखरू, पिस्ता, बादाम, मुनक्का, जायफल, लौंग, बड़ी हर्र, आंवला (बीज सहित)

इन सबको बराबर-बराबर लेवें। गूगल (दुगनी), शहद, देशी कपूर, केशर, शक्कर और घी भी मिलाएं। यज्ञ के समय धुआं नहीं होने पावे—इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

इस प्रकार शुद्ध घृत तथा सुगन्धित पदार्थों व औषधियों से बनी हुई हवन-सामग्री के द्वारा होम करने से वायुमण्डल शुद्ध होकर नाना प्रकार के रोगों को दूर करता है और स्वास्थ्य को बढ़ाता है।

१२. घृत पात्र में बचे घी में रोग निवारक शक्ति– यज्ञ-चिकित्सा विज्ञान के अन्वेषक पण्डित वीरसेन वेदश्रमी जी के अनुसार जिस घृत-पात्र (वह पात्र जिसमें घी रखा गया हो) में घी के चम्मच (या स्रुवा) को डुबोकर घी की आहुतियां दी जाती हैं, यज्ञ-हवन की समाप्ति के उपरान्त उस घी को हथेलियों पर मलकर, उन्हें यज्ञाग्नि से तपाकर, शरीर के अंगों पर लगाने से शारीरिक रोगों का निवारण होता है। चूंकि उस चम्मच को प्रत्येक आहुति के पश्चात् उस घृत में डुबोने से, घी में आहुति-भावित चम्मच का प्रभाव आ जाता है, जो प्रत्येक, आहुति के पश्चात् उत्तरोत्तर बढ़ता जाताहै। इस प्रकार, वह घी वेदमंत्रों द्वारा संस्कारित, शक्तिकृत हो जाता है और औषधीय गुण वाला बन जाता है।

१३. हवन की अग्नि से निकली रंगों की लपटें भी रोग-निवारक– यज्ञ की अग्नि में से सात प्रकार के रंगों की लपटें निरन्तर निकली रहती हैं। ये रंगीन लपटें उसी प्रकार रोग दूर करती हैं, जिस प्रकार सूर्यकिरण चिकित्सा के सिद्धान्तानुसार सूर्य किरणों द्वारा रंगीन बोतलों के सूर्य तप्त पानी व तेल आदि द्वारा रोगों का इलाज किया जाता है। इस विषय में महात्मा प्रभु आश्रित जी अपनी पुस्तक 'यज्ञ रहस्य' में लिखते हैं–

"यज्ञाग्नि से भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग निकलते हैं। उन रंगों का चित्त पर प्रभाव पड़ता है। जैसे सूर्य की रश्मियां हरी, नीली, लाल, पीली संसार की रक्षा करती है, अग्नि से निकले रंग भी वैसे ही रक्षा करते हैं। हमें सूर्य की रश्मियां प्रत्यक्ष रूपसे तो प्रतीत नहीं होतीं कि किस प्रकार से वे संसार की रक्षा करती हैं। परन्तु जब भिन्न-भिन्न रंग की बोतलों में जल अथवा तेल भर कर सूर्य-किरण चिकित्सा वैद्य सूर्य के सम्मुख एक लकड़ी के तख्ते पर विधि से रखते हैं, तब वह बोतलें अपने ही रंग

की किरणों को ग्रहण करती हैं, उस क्रिया से बोतल के जल अथवा तेल में एक विचित्र रोग नाशक गुण पैदा हो जाता है। भिन्न-भिन्न रंग की बोतलों से बना जल अथवा तेल का प्रयोग कराकर रोग को दूर करते हैं। ठीक इसी प्रकार यज्ञाग्नि में रूपरंग औषधियों के अनुसार उत्पन्न होते हैं।"

१४. हवन-यज्ञ के कारण ही भारत में विकलांगता की दर अन्य देशों से कम– श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील विद्यावाचस्पति, साहित्यालंकार के अनुसार "संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में संसार के ४ बड़े शहरों के सर्वेक्षण आंकड़े दर्शाते हैं कि अफ्रीका में प्रति ४४ बच्चों में से एक विकलांग पैदा होता है। आस्ट्रेलिया में ५३ में से एक, ब्राज़ील में ६३ में से एक, स्पेन में ७५ में से एक, मिश्र में ७६ में से एक तथा मलेशिया में १४ में से एक बच्चा विकलांग पैदा होता है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि भारत सरीखे पिछड़े देश में ११६ में से एक बच्चा विकलांग जन्म लेता है। यह अनुपात उपरोक्त सभी देशों की तुलना में कम है। इससे साबित होता है कि अन्य देशों की अपेक्षा भारत देश का वायुमण्डल अभी शुद्ध है। इस विलक्षण तथ्य के कारण दुनिया भर के वैज्ञानिकों का ध्यान भारतीय वायुमण्डल की विशेषताओं पर आकर्षित हुआ है। भारतीय वायुमण्डल की विशेषताओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करने पर पाया गया कि अन्य देशों की तुलना में यह अधिक शुद्ध है। इसका कारण प्राचीन समय से अभी तक होते आ रहे यज्ञ हैं।" *(आर्यपथ, मार्च १९८४)*

१५. विभिन्न ऋतुओं की सामग्री के घटक–

वसन्त ऋतु (चैत्र, वैशाख)

छरेला ४ भाग, तालीस पत्र ४ भाग, पत्रज २ भाग, लज्जावन्ती २ भाग, शीतल चीनी २ भाग, कपूर १ भाग, चीड़ २ भाग, देवदारु ५ भाग, गिलोय ५ भाग, अगर ३ भाग, तगार ३ भाग, नागकेसर २ भाग, इन्द्र जौ ५ भाग, गूगल ५ भाग, कस्तूरी आधा भाग, तीनों चन्दन (सफेद, लाल, पीला) ८, ८, ८ भाग, जावित्री ४

भाग, जायफल ३ भाग, धूप ४ भाग, सरसों १० भाग, कमल गट्टा ५ भाग, मजीठ २ भाग, वनकचूर ४ भाग, दालचीनी २ भाग, गूलर की छाल ४ भाग, तेजफल ४ भाग, शंखपुष्पी ६ भाग, चिरायता ५ भाग, खस ८ भाग, गोखरु ५ भाग, चीनी ८ भाग, गोघृत ६ भाग, ऋतु अनुकूल फल, भात अथवा मोहन भोग, जाण्ड की समिधा २० किलो।

ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ-आषाढ़)

मुरा ४, वायविडंग २, कपूर १, चिरौंजी २, नागरमोथा १, पीला चन्दन १, छरेला ४, निर्मली ४, शतावर ४, खस ६ गिलोय ५, धूप ४ दालचीनी १, लौंग १, कस्तूरी १/१६, चन्दन २, तगर २, भोजपत्र १, भात ४, कुशा की जड़ ४, तालीस पत्र २, पद्माख २, दारुहल्दी २, लाल चन्दन २, मजीठ १, केसर १/८, जटामांसी २, नेत्रवाला १, इलायची वड़ी १, उनाव २, आंवला २, चन्दन चूरा २, ऋतुफल १, मूंग के लड्डू ८।

वर्षा ऋतु (श्रावण-भाद्रपद)

काला अगर २, पीला अगर २, जौ ४, चीड़ २, धूप, २, सरसों ५, तगर २, देवदारु २, गूगल ८, नकछिकनी २, राल २, जायफल ४, मुण्डी ५, गोला ४, निर्मली ४, कस्तूरी १/१६, मखाने ४, तेजपत्र २, कपूर १, वनकचूर २, बेल २ जटामांसी ४, छोटी इलायची १, वच २, गिलोय ४, तुलसी के वीज ३, वायविडंग २, मुण्डी ४, शहद, चन्दन का चूरा ४, नागकेसर २, ब्राह्मी ३, चिरायता ३, उड़द के लड्डू, छुहारे ४, शंखाहुली ४ मोचरस २। ढाक की समिधा,गोघृत, चीनी, भात।

शरद ऋतु (आश्विन-कार्तिक)

तीनों चन्दन (सफेद, लाल, पीला) २, २, २ गूगल ८, नागकेसर २, इलायची बड़ी १, गिलोय ४, चिरौंजी २, बिदारी-कंद २, गूलर की छाल ४, ब्राह्मी ४, दालचीनी २, कपूरकचरी २, मोचरस २, पितपापड़ा १, अगर १, भारंगी १, इन्द्र जौ ४, रेणुका १, मुनक्का ४, असगन्ध २, शीतलचीनी २, जायफल २, पत्रज २, चिरायता २, केसर १/८, कस्तूरी १/१६, किशमिश २,

खांड ८, जटामांसी २, तालमखाना २, सहदेवी २, ढाक की समिधा, धान की खील, क्षीर, कपूर, गोघृत, ऋतुफल।

हेमन्त ऋतु (मार्गशीर्ष-पौष)

कुठ १, मूसली २, गन्धकोकिला २, पितपापड़ा २, कपूरकचरी २, नकछिकनी २, गिलोय ४, पटोलपत्र १, दालचीनी २, भारंगी १, सौंफ ४, मुनक्का ४, कस्तूरी १/१६, चीड़ १, गूगल ८, अखरोट ४, रासना २, शहद ४, पुष्करमूल २, केसर ४, छुहारे ४, गोखरु २, कोंच के बीज २, कांटेदार गिलोय २, बादाम ४, मुलहटी २, काले तिल ४, जावित्री २, लाल चन्दन २, मुश्कबाला २, तालीसपत्र २, रेणुका १, खोआ ४, बिना लवण की खिचड़ी ८, आम या खैर की समिधा, गोघृत, देवदारु।

शिशिर ऋतु (माघ-फाल्गुन)

अखरोट ४, कचूर २, वायविडंग २, राल १, मुण्डी, २, मोचरस २, गिलोय ४, मुनक्का ५, रेणुका २, काले तिल ५, कस्तूरी १/१६, केसर १/८, चन्दन ४, चिरायता ४, छुआरे ४, तुलसी के बीज ४, गूगल ८, चिरौंजी २, काकड़ासींगी ४, शतावर ४, दारुहल्दी ४, शंखपुष्पी ५, पद्माख २, कौंच के बीज २, मोहन भोग १५, खांड ८।

–स्वामी विज्ञानानन्द जी कृत 'अध्यात्म-सुधा' से साभार

१६. सवा करोड़ गायत्री-अनुष्ठान के महायज्ञ में प्रयुक्त सामग्री के घटक– पूज्यपाद स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज द्वारा, फरीदाबाद (हरियाणा) में यमुना नदी के तट पर स्थित गुरुकुल मंझावली में पांच मास तक (४ अक्टूबर, २००५ से ५ मार्च, २००६) सवा करोड़ गायत्री-अनुष्ठान का महायज्ञ आयोजित किया गया। उस अभूतपूर्व और ऐतिहासिक सुन्दर महायज्ञ में विशेष बढ़िया सामग्री का प्रयोग किया गया, जिसमें २० प्रतिशत गाय का घी मिलाया जाता रहा। उस सामग्री में प्रयुक्त द्रव्य सर्वसाधारण के लाभार्थ नीचे दिए जा रहे हैं–

हवन-सामग्री में प्रयुक्त द्रव्य			
गुड़ वच	२५० ग्राम	बीज तोंगर	२०० ग्राम
कपूर कचरी	२५० ग्राम	गिलोय	५०० ग्राम
छलीड़ा	२०० ग्राम	चिरायता	१०० ग्राम
नागर मोथा	२५० ग्राम	खस खस	१०० ग्राम
हाऊवेर	५०० ग्राम	गोरख मुंडी	१०० ग्राम
तगर	१०० ग्राम	कपूर	५० ग्राम
बालछड़	२०० ग्राम	गरी खोपा	२०० ग्राम
तालीस पत्र	२०० ग्राम	शंख पुष्पी	२०० ग्राम
वेल गिरी	१०० ग्राम	कचूर	१०० ग्राम
त्रिफला	५०० ग्राम	अश्वगन्धा	१०० ग्राम
फूल टेसू	१०० ग्राम	पानड़ी	१०० ग्राम
वांसे के पत्ते	४०० ग्राम	मुलहठी	२०० ग्राम
अमलतास	४०० ग्राम	मालकंगनी	१०० ग्राम
सुगन्ध कोकिला	३५० ग्राम	वन तुलसी	३०० ग्राम
फूल सम्या	२५० ग्राम	लाल गुलाव	२०० ग्राम
तेज पत्र	१५० ग्राम	दाल चीनी	१०० ग्राम
लाल चन्दन	१०० ग्राम	सरसों (पीली)	२०० ग्राम
दारू हल्दी	१०० ग्राम	शतावरी	१०० ग्राम

इन सवके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के अनाज (जेसे—धान, तिल, जौ, उड़द व मूंग की दालें आदि), गूगल, खीलें, खांड बूरा, सूखे मेवे (छुआरे अखरोट, बादाम, मुनक्का, मखाने, गोला, आदि) भी मिलाये गये। *—महायज्ञ की स्मारिक से साभार*

१७. क्षय रोग के रोगियों का निरोग करने वाली 'सामग्री'—

(क) डॉ. फुन्दनलाल क्षयरोगविशेषज्ञ का T.B. के ८० प्रतिशत रोगियों को निरोग बनाने वाली सामग्री का नुस्खा—

मण्डूकपर्णी, ब्राह्मी, इन्द्रायण की जड़, शतावरी, असगन्ध, विधारा, शालपर्णी, मकोय, अडूसा, गुलाव के फूल, तगर, रासना,

वंशलोचन (तवाशीर), क्षीर काकोली, जटामांसी, कुंडरी, गोखरू, पिस्ता, वादाम, मुनक्का, जायफल, लौंग, हरड़ वड़ी गुठली सहित, आमला, जीवन्ती, पुनर्नवा, नगेन्द्र, वामड़ी, चीड़ का बुरादा, खूबकलां समभाग। गिलोय, गुग्गुल चार भाग, केसर, शहद, कपूर देशी, शक्कर—दस भाग, घी इतना कि सामग्री खूब तर हो जाये जिसके लडडू वन सकें। शुष्क रह जाने पर खांसी हो जाने का भय है। सांठी के चावलों की खीर अलग वनाई जाए।

नोट—यज्ञ सूर्योदय तथा अस्त दोनों समय करना चाहिए। शीतकाल में प्रातः के स्थान पर दोपहर को भी कर सकते हैं। चील अथवा वांस के जंगल में वैठकर यज्ञ करना रोगी के लिए विशेष हितकारी है। यज्ञ की अग्नि प्रदीप्त होनी चाहिए। आम अथवा ढाक की सूखी समिधा होनी चाहिएं। धुआं विशेष न होना चाहिए। हवन के समय रोगी उच्चस्वर में यज्ञमंत्र उच्चारण करे। चिकित्सा के साथ-साथ वस्ती कर्म तथा जल चिकित्सा भी रोग दूर करने में विशेष सहायक हैं। निर्वल स्वस्थ मनुष्य, जिनको क्षय रोग होने का भय हो, इसी सामग्री से नित्यप्रति यज्ञ करके क्षय रोग के भय से मुक्त हो सकते हैं।

(ख) मेहता सीताराम दत्त लाहौर वाले का नुस्खाः

रोगी के कमरे में निम्नलिखित सामग्री प्रतिदिन दो अथवा तीन वार जलाओ ताकि घर और कमरे की वायु में इन औषधियां के परमाणु सम्मिलित होकर श्वास के साथ फेफड़ों में जाते रहें।

लोवान तथा बुरादा चन्दन सफेद ५-५ तोला। नीम के पत्ते, गिलोय के पत्ते, अड़ूसा के पत्ते, दस-दस तोला, मुशक काफूर ढाई तोला मिलाकर तैयार कर लें और पीपल या वेर की लकड़ी जलाकर उसमें धीरे-धीरे आहुतियां डालें।

१८. हवन की भस्म (राख) की मरहम वनाने की विधि एवं प्रयोग

(i) **भस्म कव लें**? भस्म यज्ञ के तुरन्त वाद नहीं लेनी चाहिए। यज्ञ के १०-१२ घंटे वाद जव अग्नि शांत व शीतल हो जाए, तव भस्म को यज्ञकुंड से लें। उस भस्म को सूक्ष्म वस्त्र द्वारा

कपड़छान करें। जो स्थूल भाग वस्त्र में वचे, उसे वृक्ष-वनस्पतियों, फूल-पौधों में डाल दें। छने हुए भाग से ही भस्म वनाएं।

(ii) **मरहम बनाने की विधि**–एक छटांक (६० ग्राम) गो-घृत में वीस ग्राम छनी हुई भस्म मिलाने पर मरहम तैयार हो जाती है।

(iii) **भस्म व मरहम के प्रयोग**–

रोग	प्रयोग-विधि
अतिसार	एक गिलास जल में दस ग्राम भस्म मिलाकर प्रयोग करें।
खुजली, दाद आदि त्वचा-रोग	दस किलो जल में बीस ग्राम भस्म मिलाएं।
मुख पर छाईं, एग्ज़ीमा आदि	गौ के कण्डे से खुजलाकर उपर्युक्त मरहम का प्रयोग करें।
पायरिया, पानी लगना आदि सभी दंत-रोग	उपरोक्त भस्म में सेंधा नमक और कपूर मिलाएं। इस प्रकार तैयार किया 'दंत मंजन' दंत-रोगों में विशेष लाभप्रद है।

–स्वामी विवेकानन्द कृत
'अग्निहोत्र यज्ञ विज्ञान की दृष्टि में' से साभार

१६. औषधीय पदार्थों की धूनी द्वारा रोग उपचार

विभिन्न रोगों के उपचार में, निम्न द्रव्यों की धूनी की भी सहायता ली जा सकती है। प्रातः सायं धूनी (fumigation) देने के लिए हवन की समाप्ति पर, द्रव्यों को समिधाओं के अंगारों पर रखा जाता है। इसके पश्चात् रोगी व्यक्ति, हवनकुंड से निकलने वाला औषधीय धुआं सेवन करके निरोग-लाभ करता है।

धूनी में प्रयुक्त किए जाने वाले औषधीय पदार्थ

रोग	पदार्थ
१. टाइफाइड	नीम, चिरायता, पित्तपाड़ा, त्रिफ़ला, समभाग घी मिश्रित धूनी दें

२. ज्वरनाशक	अजवाइन की धूनी दें
३. नज़ला, जुकाम, सिर दर्द	मुनक्का की धूनी दें
४. नेत्रज्योति वर्धक	शहद की धूनी दें
५. मस्तिष्क बलवर्धक	शहद, सफ़ेद चन्दन की धूनी दें
६. वातरोग नाशक	पिपली की धूनी दें
७. मनोविकार नाशक	गूग्गल और अपामार्ग की धूनी
८. मधुमेह नाशक	गूग्गल, लोबान, जामुन वृक्ष की छाल, करेले का डंठल, सम्भाग घी मिश्रित धूनी दें
९. मानसिक उन्माद नाशक	सीताफल के वीज और जटामांसी चूर्ण की धूनी दें
१०. चित्त भ्रम नाशक	कचूर, खस, नागरमोथा, महुआ, सफ़ेद चन्दन, गूग्गल, अगर, बड़ी इलायची, नरवी और शहद सम्भाग
११. पीलिया नाशक	देवदारु, चिरायता, नागरमोथा, कुटकी, वायविडंग
१२. क्षय नाशक	गूग्गल, सफ़ेद चन्दन, गिलोय, वासा (अडूसा) १००-१०० ग्राम चूर्ण, कपूर ५० ग्राम, १०० ग्राम घी
१३. मलेरिया नाशक	गूग्गल, लोबान, कपूर, कचूर, हल्दी, दारूहल्दी, अगर, वायविड्डंग, बालछड़ (जटामांसी) देवदारू, वच, कठू, अजवाइन, नीम पते सम्भाग चूर्ण घी मिलाकर हवन करें तथा धूनी दें।
१४. सर्वरोगनाशिनी (अपराजित धूप)	गूग्गल, वच, गन्ध, तृण, नीम पत्ते आकपत्ते, अगर, राल, देवदारू, छिलका सहित मसूर सम्भाग घी युक्त
१५. संधिगत ज्वर नाशक (जोड़ों का दर्द)	सम्भालू (निर्गुण्डी) के पत्ते, गूग्गल सफ़ेद सरसों, नीम पत्ते, राल सम्भाग चूर्ण घी मिश्रित धूनी
१६. निमोनिया	पोहकर मूल, वच, लोबान, गूग्गल,

१७. जुकाम नाशक	अडूसा सम्भाग चूर्ण घी मिश्रित धूनी खुरासानी अजवाइन, जटामांसी, पशमीना कागज़, लालबूरा, सम्भाग चूर्ण घी युक्त धूनी
१८. पीनस (जुकाम का बिगड़ा रूप)	बरगद पत्ते, तुलसी पत्ते, नीम पत्ते, वायविडंग, सहजने की छाल सम्भाग चूर्ण में धूप का चूरा मिलाकर धूनी
१९. श्वास कास नाशक	बरगद पत्ते, तुलसी पत्ते, वच, पोहकर मूल, अडूसा पत्र सम्भाग चूर्ण घी युक्त धूनी
२०. सिर दर्द नाशक	काले तिल और वायविड्डंग चूर्ण घी युक्त धूनी
२१. चेचक खसरा नाशक	गूग्गल, लोबान, नीम पत्ते, गंधक कपूर, काले तिल और वायविडंग चूर्ण घी युक्त धूनी
२२. जिव्हा तालूरोग नाशक	मुलहठी, देवदारू, गंधाविरोजा, राल गूग्गल, पीपल, कुलंजन, कपूर, लोबान सम्भाग घी धूनी
२३. कैंसर नाशक	१. गूलर छाल, २. गूलर फल, ३. अशोक छाल, ४. अजुन छाल, ५. लोघ्र, ६. माजूफल, ७. दारूहल्दी, ८. हल्दी, ९. खोपरा, १०. तिल, ११. जौ, १२. चिकनी सुपारी, १३. शतावर, १४. काकुजंघा, १५. मोचरस, १६ खस, १७. मंजीष्ठ, १८. अनारदाना, १९. सफ़ेद चन्दन, २० लाल चन्दन, २१. गंधा विरोजा, २२. नरवी, २३. जामुन पत्ते, २४. घाय के पत्ते सम्भाग चूर्ण में दस गुना शक्कर और एक गुना केसर से दिन में तीन बार हवन करें।

—'तपोभूमि' दिसम्वर 2005 में डॉ. कमल नारायण वेदाचार्य के लेख पर आधारित

हवन-यज्ञ सम्बन्धी दो भजन

(१)

श्री पं. प्रकाश चन्द्र जी 'कविरत्न' द्वारा रचित भजन

यज्ञ जीवन का हमारे श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है।
यज्ञ का करना कराना आर्यों का धर्म है॥
यज्ञ से दिशि हों सुगन्धित शान्त हो वातावरण।
यज्ञ से सद्ज्ञान हो और यज्ञ से शुद्ध आचरण॥
यज्ञ से हो स्वस्थ्य काया, व्याधियां सब नष्ट हों।
यज्ञ से सुख सम्पदा हो, दूर सारे कष्ट हों॥
यज्ञ से दुष्काल मिटते, यज्ञ से जल वृष्टि हो।
यज्ञ से धन धान्य हो बहु भांति सुखमय सृष्टि हो॥
यज्ञ है प्रिय मोक्षदाता, यज्ञ शक्ति अनूप है।
यज्ञमय यह विश्व है, यह विश्व यज्ञस्वरूप है॥
यज्ञ पुण्य प्रकाश से सब पाप ताप तिमिर हरे।
यज्ञ-नौका से अगम संसार सागर से तरें॥

(२)

होता है सारे विश्व का, कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान् यज्ञ से॥
ऋषियों ने ऊंचा माना, है स्थान यज्ञ का।
करते हैं दुनियां वाले सब, सम्मान यज्ञ का॥
दर्जा है तीन लोक में, महान् यज्ञ का।
भगवान् का है यज्ञ और भगवान् यज्ञ का॥
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से॥१॥ होता है सारे.
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुंचाते हैं अग्नि देव।
बदले में एक के अनेक, देते हैं अग्नि देव॥
बादल बना के भूमि पर, बरसाते हैं अग्नि देव।
पैदा अनाज करते हैं–भगवान् यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से॥२॥ होता है सारे.

शक्ति और तेज यश भरा, इस यज्ञ नाम में।
साक्षी यही है विश्व के हर नेक काम में॥
पूजा है इसको कृष्ण ने, भगवान् राम ने।
होता है कन्या दान भी, इसी के सामने॥
मिलता है राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से ॥३॥ होता है सारे.
सुख शान्ति दायक मानते हैं, दयानन्द इसे।
वशिष्ठ, विश्वामित्र और नारद मुनि इसे॥
इसका पुजारी कोई भी पराजित नहीं होता।
भय यज्ञ-कर्ता को कभी किञ्चित् नहीं होता॥
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से ॥४॥ होता है सारे.
चाहे अमीर है कोई, चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुश-नसीब है॥
हम सब में रहे सर्वदा यज्ञीय भावना।
हम सबकी सच्चे दिल से है, यह श्रेष्ठ कामना॥
होती है पूर्ण कामना महान् यज्ञ से ॥५॥ होता है सारे.

यज्ञ-महिमा

योगिराज श्री कृष्ण चन्द्र जी के मुखारविन्द से-

गीता अध्याय ३ श्लोक १० :- प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजाओं को रच कर उनसे कहा कि तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा वृद्धि को प्राप्त हो ओ। और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित भोग प्रदान करने वाला हो।

श्लोक ११ :- तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा देवताओं को उन्नत करो और वे देवता तुम लोगों को उन्नत करें। इस प्रकार निःस्वार्थ भाव से एक-दूसरे को उन्नत करते हुए तुम लोग परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे।

श्लोक १२ :- यज्ञ के द्वारा बढ़ाये हुए देवता तुम लोगों को बिना माँगे ही इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे।
इस प्रकार उन देवताओं के द्वारा दिये हुए भोगों को जो पुरुष उनको दिये बिना स्वयं भोगता है वह चोर ही है।

श्लोक १३ :- यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। और जो पापी लोग अपना शरीर पोषण करने के लिए ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।

श्लोक १४ :- सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते है, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है, और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है। कर्म समुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्व व्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

"अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः"

परमात्मा की पवित्र वाणी वेद में कहा है कि यह यज्ञ संसार की नाभि है। संसार में जड़ जगत् एवं चेतन जगत दोनों को अर्थात् प्राणिमात्र को जीवन प्रदान करने वाला है। जिस प्रकार गर्भ में वच्चा नाभि के माध्यम से पुष्ट होता है उसी प्रकार यज्ञ से संसार के प्राणी, औषधियां, वनस्पतियां आदि पुष्ट होते हैं।

महाभारत काल से पूर्व संसार में यज्ञ सम्पन्न किए जाते थे अतः सतयुग, त्रेता, द्वापर युगों में सुख शान्ति आनन्द था। महर्षि पाणिनि के शिक्षा शास्त्र की उपेक्षा किये जाने से बाद में शब्दों के सही अर्थों के बजाय स्वार्थपूर्ण अर्थ किये जाने लगे। धर्म, मत, मज़हब को न समझने से यह एक समुदाय से जोड़ दिया गया तथा मनमाने मंत्र बना लिए गए जिससे समुदायों में भेद उत्पन्न किए गए।

सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान सृष्टि के रचयिता परमात्मा ने परमाणुओं को वैज्ञानिक नियमानुसार गति देकर प्राणियों के कल्याण के लिए पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश बनाए, जिनका सभी प्राणी उपभोग करते हैं। अतः सभी प्राणी परमात्मा के ऋणी हैं। सभी को इस ऋण से मुक्त होने की आवश्यकता है। यज्ञ का सही अर्थ देवपूजा संगतिकरण व दान है। यज्ञ द्वारा वातावरण शुद्धि के साथ-साथ मानवमात्र का संगतिकरण भी है। मानवमात्र में प्रेम सद्भाव के साथ ही सही मन्त्रोच्चारण से शारीरिक व मानसिक उन्नति भी होती है। फलस्वरूप सामाजिक उन्नति होती है, उन्नत समाज का राष्ट्राध्यक्ष ब्रह्मचर्य तप से राष्ट्र की रक्षा करता है। "विजानीहि आर्ये अन्ये च दस्यवः" वेद कहता है कि समाज में श्रेष्ठ व्यक्तियों के अतिरिक्त कुछ विकृत मानसिकता के भी लोग होते हैं। अतः कर्तव्य कार्यों का निर्वहन करते हुए राष्ट्र में श्रेष्ठ व्यक्तियों की रक्षा भी मानवीय धर्म मानते हुए राष्ट्राध्यक्ष के लिए करना अपेक्षित है।

–विजय भूषण आर्य

सरस्वती साहित्य संस्थान

295, जागृति एन्क्लेव, दिल्ली-92 ☎ 22152435